अगस्त 2017

दादावाणी

कीमत ₹ 10

अतिक्रमण हुआ कि दाग़ गिरा। उसे धोने के बाद चैन से बैठना। पाँच-सात-दस अतिक्रमण हुए हो, तो उनका एक साथ प्रतिक्रमण करके, स्वच्छ कर देना है।

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 12 अंक : 10
अखंड क्रमांक : 142
अगस्त 2017

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 100 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 100 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 10 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

प्रतिक्रमण की सैद्धांतिक समझ

संपादकीय

प्रत्येक मानव अपने जीवन काल के दौरान संयोगों के दबाव से ऐसी परिस्थितियों में फँस जाता है कि संसार व्यवहार में भूल नहीं करनी हो फिर भी उससे भूलें हो जाती हैं और उन भूलों में से वह मुक्त नहीं हो पाता। ज्ञान प्राप्ति के बाद महात्माओं को अपने निकलते हुए डिस्चार्ज के सामने जागृति तो रहती है लेकिन उसके साथ-साथ कभी-कभी यह डिस्चार्ज उन्हें उलझन में डाल देता हैं कि ज्ञान लेने के इतने सालों के बाद भी दोष होने बंद क्यों नहीं हो रहे? दोष धुल क्यों नहीं रहे? कषाय कम क्यों नहीं हो रहे?

ऐसी परिस्थिति में सच्चे दिल वाले व्यक्तियों को हमेशा उलझन होती है। उनकी भूलों को खत्म करने के लिए और आध्यात्मिक उन्नति साधी जा सके, उसके लिए तीर्थंकरों और ज्ञानियों ने जगत् को आलोचना-प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान रूपी हथियार अर्पण किए हैं।

अपने निमित्त से सामने वाले के अहंकार को जो दु:ख हो जाता है, उससे वास्तव में हमारे ही रिलेटिव पर दाग़ पड़ते हैं और उस रिलेटिव को शुद्ध करने के लिए ज़रूरत हैं मात्र प्रतिक्रमण की! 'मोक्ष का मार्ग है शूरवीरों का, न कि कायरों का' और यथार्थ शूरवीरता का उपयोग तो प्रतिक्रमण करने के लिए ही करना है, जिससे कि जल्दी मोक्ष में पहुँच सकें।

प्रतिक्रमण मोक्षमार्ग का ऐसा शस्त्र है जिसमें प्रज्ञाशक्ति सीधे चंदू को जागृत करके उससे प्रतिक्रमण करवाती है। ये भूलें जो होती हैं, वे तो परिणाम हैं, रिज़ल्ट हैं। प्रतिक्रमण दोषों के कॉज़ेज़ को तोड़कर दोषों को निर्मूल कर देता है। महावीर भगवान का सिद्धांत है कि यदि सच्चे हृदय से, हार्टिली प्रतिक्रमण करवाया जाए तो, चाहे कैसे भी दोष हों, इसी जन्म में सभी प्रकार के बैर से मुक्त हो सकते हैं और साथ ही साथ यदि प्रतिक्रमण की सैद्धांतिक लिंक जुड़ जाए तो आत्मा का अनुभव भी दूर नहीं है।

प्रस्तुत अंक में परम पूज्य दादाश्री प्रतिक्रमण को यथार्थ सैद्धांतिक रूप से समझाते हुए कहते हैं कि सिर्फ अक्रम विज्ञान द्वारा आपके निश्चय संभल जाएगा और प्रतिक्रमण द्वारा रिलेटिव संभल जाएगा। पूर्व जन्म में जो परमाणु चिपक गए थे, उन्हें इस विज्ञान द्वारा (सामायिक में) अलग रहकर देखने से वे शुद्ध होते जाएँगे और प्रतिक्रमण से कर्म हल्के होते जाएँगे, संसार का बोझ भी कम होता जाएगा और परस्पर दु:ख कम होते जाएँगे।

ज्ञानीपुरुष दादाश्री द्वारा प्ररुपित इस भाव प्रतिक्रमण से अंतर में शांति का अनुभव होगा और साथ ही साथ राग-द्वेष जड़ मूल से चले जाएँगे। स्वरूप ज्ञान की प्राप्ति के बाद तेजी से प्रतिक्रमण की सीढ़ी पकड़ लेनी चाहिए क्योंकि अक्रम विज्ञान ने हमें सीधा जंप करवा दिया। K.G. से सीधे ही बैठा दिया हैं Ph.D. की कक्षा में। इसलिए अब बीच की कक्षाओं के सिलेबस को पिकअप करने के लिए महात्मा गण अब सच्चे हृदय से प्रतिक्रमण की अदृश्य सीढ़ी पकड़ लें, यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

प्रतिक्रमण की सैद्धांतिक समझ

अनुपचारिक व्यवहार में प्रतिक्रमण

प्रश्नकर्ता : यह 'ज्ञान' लेने के बाद व्यवहार को आपने निकाली कहा है, वह बात उचित है लेकिन उसमें कहीं अनुपचारिक व्यवहार होता है तो वहाँ पर 'चार्जिंग' का भयस्थान कहाँ है?

दादाश्री : 'चार्ज' हो जाएँ, ऐसे भयस्थान होते ही नहीं है लेकिन जहाँ शंका हो जाए वहाँ पर 'चार्ज' हो जाएगा। जहाँ शंका होती है उस भयस्थान को 'चार्जिंग वाला' मानना। शंका यानी, कैसी शंका? कि नींद न आए ऐसी शंका। ऐसी छोटी सी ही शंका हो गई और बंद हो जाए ऐसी नहीं क्योंकि शंका होने के बाद फिर उसे भूल गए तो उस शंका की कीमत ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर क्या बिंदास रहना है? निडर और लापरवाह रहना है?

दादाश्री : नहीं, लापरवाह रहेगा तो मार पड़ेगी। लापरवाह और अगर बेफिक्र हो जाएगा तो मार पड़ेगी। अग्नि में क्यों हाथ नहीं डालते?

प्रश्नकर्ता : तो फिर वहाँ कौन सा औपचारिक 'एक्शन' लेना चाहिए?

दादाश्री : और क्या 'एक्शन' लोगे? वहाँ पछतावा और प्रतिक्रमण ही 'एक्शन' है।

चार्ज बंद, फिर भी ज़रूरत है प्रतिक्रमण की

प्रश्नकर्ता : खास यही मुद्दा समझना था कि महात्माओं को ज्ञान प्राप्ति के बाद 'कर्म' 'चार्ज' होते हैं या नहीं?

दादाश्री : 'चार्ज' होंगे ही कैसे? 'चार्ज' कब होंगे? 'व्यवस्थित' कर्ता है, चंदूभाई कर्ता नहीं उसका तुझे विश्वास हो गया है?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : अगर चंदूभाई कर्ता हैं तो 'चार्ज' होगा। अत: वह वाक्य ही नहीं रहा? फिर भी प्रतिक्रमण करना अच्छा है। प्रतिक्रमण करेंगे तो ऐसा कहा जाएगा कि हमारी आज्ञा का पालन किया। अतिक्रमण हुआ इसलिए प्रतिक्रमण करो।

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण करने से नया 'चार्ज' नहीं होगा?

दादाश्री : आत्मा कर्ता बने तो कर्म बंधता है।

प्रश्नकर्ता : अगर महात्माओं के हर एक कर्म 'डिस्चार्ज' हैं तो प्रतिक्रमण करने की क्या ज़रूरत है?

दादाश्री : 'डिस्चार्ज' है इसलिए प्रतिक्रमण करने की ज़रूरत नहीं है लेकिन यदि अतिक्रमण हो जाए, तभी प्रतिक्रमण करना है। खाए-पीए

उसके लिए कोई प्रतिक्रमण नहीं करना है। क्या मैं आपको ऐसा कुछ पूछता रहता हूँ कि 'आपने आम खाए या नहीं खाए?' तूने पकौड़े क्यों खाए थे? तू होटल में क्यों गया था? क्या मैं ऐसा कुछ पूछता हूँ? ऐसा कुछ पूछा मैंने? नहीं। क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह सब 'डिस्चार्ज' है!

'डिस्चार्ज' भाव से किसी को ब्लैम (आक्षेप) कर दें तो उसका प्रतिक्रमण कर लेना है!

प्रश्नकर्ता : जिस पर ब्लैम आया उसे भी प्रतिक्रमण करना है?

दादाश्री : हाँ! उसे भी करना है कि 'मेरे किस दोष के कारण यह हुआ!' लेकिन ब्लैम लगाने वाला ज़्यादा गुनहगार है।

अपमान आए, तब भी करना है प्रतिक्रमण

प्रश्नकर्ता : यदि सामने वाला व्यक्ति अपना अपमान करे तब भी क्या हमें उसका प्रतिक्रमण करना चाहिए?

दादाश्री : अपमान करे तभी प्रतिक्रमण करना है, आपको मान दे तब नहीं करना है। प्रतिक्रमण करोगे तो सामने वाले पर द्वेष भाव तो होगा ही नहीं, ऊपर से उस पर आपका अच्छा असर पड़ेगा। आपके साथ द्वेषभाव नहीं होगा, वह तो समझो कि पहला स्टेप है लेकिन फिर उसे खबर भी पहुँचती है।

प्रश्नकर्ता : क्या उसके आत्मा को पहुँचता है?

दादाश्री : हाँ, ज़रूर पहुँचता है। फिर वह आत्मा उसके *पुद्गल* (जो *पूरण* और *गलन* होता है)को भी धकेलता है कि, 'भाई, फोन आया तेरा।' यह जो अपना प्रतिक्रमण है, वह अतिक्रमण के ऊपर है, क्रमण पर नहीं।

प्रश्नकर्ता : बहुत प्रतिक्रमण करने पड़ेंगे?

दादाश्री : जितनी स्पीड में आपको मकान बनाना हो उतने कारीगर बढ़ाना। ऐसा है न, कि इन बाहर के लोगों के लिए आपके प्रतिक्रमण नहीं होंगे तो चलेगा लेकिन अपने आसपास के और नज़दीक के, घर के लोग हैं, उनके प्रतिक्रमण अधिक करने हैं। घर वालों के लिए मन में भाव रखना है कि 'मेरे साथ जन्म लिया है, साथ में रहते हैं तो किसी दिन ये मोक्षमार्ग पर आएँ।'

ज्ञान के बाद 'देखते' रहो

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद हमें किसी ने गाली दी, फिर हमें ऐसा लगता है कि इसे दो गाली देनी है। अब फिर गाली देते भी है फिर 'हम' देखते हैं कि इन चंदूभाई को यह देने का मन हुआ, फिर दी और उन चंदूभाई को हम देखते हैं, तो वह क्या कहलाएगा? वह 'चार्ज' कहलाएगा?

दादाश्री : यह सब हो गया, उसे तू देखता रहा?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : बस तो छूट गया। तुझे लेना-देना नहीं रहा।

प्रश्नकर्ता : किसी ने हमें गाली दी तब हमें ऐसा होता है कि हमें नहीं देनी चाहिए। लेकिन यदि चंदूभाई ऐसा कहें कि 'नहीं! देनी ही चाहिए'। और बाद में चंदूभाई जाकर दे आते हैं। तब भी भीतर ऐसा होता है कि यह गलत किया है। हम ऐसा देखते हैं लेकिन चंदूभाई को रोक नहीं पाते।

दादाश्री : उसमें हर्ज नहीं है। 'तेरी' ज़िम्मेदारी नहीं है। चंदूभाई की ज़िम्मेदारी है।

सो वह व्यक्ति चंदूभाई को डाँटता है कि, 'कैसे नालायक हो और क्या बोलते रहते हो?' या तो धौल लगा देगा। जो ज़िम्मेदार है उसे मार खानी पड़ती है।

प्रश्नकर्ता : तो क्या उसे 'चार्ज' करना कहेंगे?

दादाश्री : नहीं, 'चार्ज' तो नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण करना चाहिए?

दादाश्री : प्रतिक्रमण करेगा तो साफ हो जाएँगी सभी फाइलें। ज्ञान में रहकर साफ करके रख दीं। जितने कपड़े धो देते हैं न, उतने साफ करके रख देने हैं। फिर अपने आप ही इस्त्री में जाएँगे।

समझो! 'करना नहीं है' उसे

प्रश्नकर्ता : कई लोग ऐसा कहते हैं कि 'हमें शुद्धात्मा पद दिया है। शुद्धात्मा कुछ करता ही नहीं है। इसलिए हमें कुछ भी बाधक नहीं है। कुछ करने की ज़रूरत ही नहीं है। प्रतिक्रमण करने की ज़रूरत ही नहीं है।

दादाश्री : ऐसा सब गलत है ।

प्रश्नकर्ता : यानी अब वह एक व्यू पॉइन्ट (दृष्टि बिंदु) हुआ। दूसरे क्या कहते हैं कि 'भाई, हमारे जिन कुछ कर्म का उदय आ जाए, उस वक्त प्रतिक्रमण करने की ज़रूरत है'।

दादाश्री : 'कुछ करने की ज़रूरत नहीं है' ऐसा जो कहते हैं तो उन्हें कहो, 'आप खाते क्यों हो? यदि कुछ करना नहीं है, कहते हो तो?' अगर खाना बंद कर दिया है तो कुछ भी करने को नहीं रहता। खाना बंद कर दिया है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : नहीं, वह तो चल रहा है।

दादाश्री : कुछ नहीं करना है, इसका अर्थ तो यह है कि कुछ भी कर्ताभाव न करे। करने से तो लट्टू बन जाते हैं।

प्रतिक्रमण भी डिस्चार्ज

प्रश्नकर्ता : हम पर कोई असर ही न होता हो, राग-द्वेष न होते हों तो फिर प्रतिक्रमण की ज़रूरत है क्या?

दादाश्री : अगर तुझे राग-द्वेष नहीं होते हैं तो, तुझे प्रतिक्रमण करने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन यदि इन चंदूभाई को हो रहे हों तो चंदूभाई को तो करने की ज़रूरत है न!

प्रश्नकर्ता : ज़्यादातर तो, 'मैं चंदूभाई हूँ', उसी तरह का वर्तन होता रहता है। काफी लंबे समय के बाद ध्यान आता है। कई बार ध्यान भी नहीं आता तो क्या उसका प्रतिक्रमण करना पड़ेगा?

दादाश्री : इस प्रकार का जितना ध्यान रहे, उतने प्रतिक्रमण करने पड़ेंगे।

प्रश्नकर्ता : क्यों करने पड़ेंगे?

दादाश्री : प्रतिक्रमण तू कहाँ करता है? वे तो चंदूभाई को करने हैं।

प्रश्नकर्ता : चंदूभाई को किस वजह से करने हैं?

दादाश्री : क्यों?

प्रश्नकर्ता : सब 'डिस्चार्ज' फॉर्म में है तो फिर?

दादाश्री : किसी को दुःख हो जाए तो प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। तेरी क्रिया से किसी को

दु:ख हो जाए तो प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। यदि दु:ख नहीं होता हो तो कुछ नहीं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ये जो चंदूभाई हैं, वे तो 'डिस्चार्ज' ही हैं न तो फिर प्रतिक्रमण की क्या ज़रूरत है? वह अभी भी मुझे समझ में नहीं आया?

दादाश्री : प्रतिक्रमण भी 'डिस्चार्ज' है। साथ ही यह जो कह रहा है, 'क्या ज़रूरत है'। वह भी 'डिस्चार्ज' है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर मन में ऐसा होता है कि इतने सब प्रतिक्रमण कौन करे? तो वह भी 'डिस्चार्ज' है?

दादाश्री : वह भी 'डिस्चार्ज' है। उसमें हर्ज नहीं हैं लेकिन यदि हमने कुछ कहा और सामने वाले को दु:ख हो जाए तो हमें प्रतिक्रमण करवाना है और चंदू से कहना है कि 'प्रतिक्रमण करो। यों किसी को दु:ख हो, ऐसा मत करना।'

प्रश्नकर्ता : अगर चंदूभाई टेढ़े चलें और कहें, 'मुझे प्रतिक्रमण नहीं करना,' तो?

दादाश्री : तो हर्ज नहीं। टेढ़े चलें तो कहना, 'अभी सो जाओ।' वे कुछ देर के बाद ठीक हो जाएँगे, फिर प्रतिक्रमण करवाना। शाम को बड़ा प्रतिक्रमण करवाना।

प्रतिक्रमण से विलय होती है राग-द्वेष रूपी चिपचिपाहट

प्रश्नकर्ता : (हम प्रतिक्रमण क्यों करते हैं?)

दादाश्री : साफ करने के लिए। दाग़ लग जाए तो, उसे तुरंत साफ कर देते हैं। नहीं तो फिर वापस धोने के लिए आना पड़ेगा। एक दाग़ लगे तो उसे धो डालो। अतिक्रमण हुआ यानी दाग़ लगा। चाहे किसी भी कलर का दाग़ लगे, उसे धो देने के बाद ही हमें बैठना है। उस समय चंदूभाई आड़ाई करें तो शाम को सब धो देना। पाँच-सात-दस अतिक्रमण हो गए हों तो इकट्ठे प्रतिक्रमण करके, साफ कर देना है।

आपको खूब हार्टिली पछतावा हो तो वह दोष फिर से नहीं होगा और फिर से हो जाए तो भी उसमें हर्ज नहीं है, परंतु पछतावा खूब करते रहना। वास्तव में तो यदि हार्टिली पछतावा हो तो उससे दोष अवश्य जाता ही है!

निरंतर प्रतिक्रमण करके गाढ़ राग-द्वेष की चिपचिपाहट को धोकर पतले कर देना चाहिए। अगर सामने वाला टेढ़ा है तो वह अपनी भूल है, हमने वह धोया नहीं है और धोया है तो ठीक से पुरुषार्थ नहीं हुआ है। जब भी समय मिले, तब जो गाढ़ ऋणानुबंधी हों, उनके (प्रति राग-द्वेष को) धोते रहना चाहिए। ऐसे बहुत नहीं होते, पाँच या दस के साथ ही गाढ़ ऋणानुबंध होते हैं। उनका ही प्रतिक्रमण करना पड़ता है, उस गाढ़ेपन को ही धोते रहना है। कौन-कौन लेने-देने वाले हैं, उन्हें ढूँढ लेना है। अगर नया खड़ा होगा तो तुरंत ही पता चल जाएगा लेकिन जो पुराने हैं उन्हें ढूँढ निकालना है। जो-जो नज़दीक के ऋणानुबंधी होते हैं, वहीं पर अधिक गाढ़ापन होता है।

प्रतिक्रमण का धर्म

तू तेरे दोषों को पहचान और मुक्त हो जा। बस इतना ही तुझे मुक्तिधाम देगा। इतना ही काम करने को कहा है भगवान ने और प्रतिक्रमण तो नकद-कैश प्रतिक्रमण करने को कहा है। यह तो उधार प्रतिक्रमण। बारह महीनों में पर्यूषण आता है, उस दिन प्रतिक्रमण करते हैं, तब उल्टे मूर्च्छित

होकर, नए कपड़े पहनकर घूमते हैं। ऐसे मूर्च्छा वाले परिणाम को भगवान ने 'धर्म' नहीं कहा है। प्रतिक्रमण का धर्म यदि पकड़ लिया तब अगर तेरे सिर पर गुरु नहीं होंगे तो भी चलेगा। प्रतिक्रमण का धर्म यानी क्या? आपने इनसे कहा कि 'आप खराब हो,' तब आपको प्रतिक्रमण करना पड़ेगा, कि जो मुझे नहीं बोलना चाहिए था, वह बोल दिया इसलिए भगवान के पास आलोचना करनी चाहिए। वीतराग को याद करके आलोचना करनी चाहिए कि, 'भगवान मेरी भूल हो गई है। मैंने इस भाई को ऐसा कहा इसलिए उसका पछतावा करता हूँ। अब फिर से ऐसा नहीं करूँगा।' 'फिर से नहीं करूँगा,' उसे प्रत्याख्यान कहते हैं। भगवान का आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान, उतना ही पकड़ ले न, वह भी पूरा नकद, उधार नाम मात्र को भी नहीं रहने दे, आज का आज और कल का कल, जहाँ कहीं कुछ भी हो जाए तो वहीं पर नकद दे दे तो अमीर बन जाएगा, तब फिर वैभव भोगेगा और मोक्ष में जाएगा!

अब अगर आपने उन्हें उल्टा कह दिया हो तो आपको प्रतिक्रमण करना होगा लेकिन उन्हें भी आपका प्रतिक्रमण करना होगा। उन्हें क्या प्रतिक्रमण करना होगा कि, 'मैंने कब भूल की होगी कि उन्हें मुझे गाली देने का समय आया?' यानी उन्हें उनकी भूल का प्रतिक्रमण करना होगा। उन्हें उनके पूर्वजन्म का प्रतिक्रमण करना होगा और आपको आपके इस जन्म का प्रतिक्रमण करना होगा! एक दिन में ऐसे पाँच सौ-पाँच सौ प्रतिक्रमण करेंगे तो मोक्ष में जाएँगे।

प्रतिक्रमण से चित्त की शुद्धि

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण की क्रिया, वह चित्त को शुद्ध करती है क्या?

दादाश्री : चित्त को शुद्ध करने के लिए ही प्रतिक्रमण करते हैं और सामने वाले के साथ बैर न बंधे इसलिए। दोनों के लिए।

प्रश्नकर्ता : अभी चित्त के बारे में बहुत सारे प्रतिक्रमण किए न तो मेरे दर्शन में बहुत परिवर्तन आ गया!

दादाश्री : हाँ, प्रतिक्रमण से बहुत परिवर्तन हो जाता है। उसे भी हमें देखते रहना है।

प्रतिक्रमण दोषों से छूटने के लिए

प्रश्नकर्ता : इन एक-एक परमाणु को शुद्ध करने के लिए जो भी होता है हम उसे ज्ञाता-दृष्टा रहकर देखते रहें तो वे शुद्ध हो जाते हैं या फिर प्रतिक्रमण करने से शुद्ध होते हैं?

दादाश्री : नहीं, नहीं, ज्ञाता-दृष्टा रहने से ही शुद्ध होते हैं। जैसे-जैसे आत्मा का ज्ञाता-दृष्टापन कम होता जाता है, वैसे-वैसे शौर्य कम होता जाता है लेकिन जैसे-जैसे ज्ञाता-दृष्टापन बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे शौर्य बढ़ता जाता है।

प्रश्नकर्ता : तो प्रतिक्रमण से क्या होता है? परमाणु शुद्ध नहीं होते, दादा?

दादाश्री : प्रतिक्रमण तो इन (दोषों) से छूटने के लिए है, इससे परमाणु शुद्ध नहीं होते। हमें आत्मा में रहकर देखना है। हमारे देखने से ही (परमाणु) छूट जाएँगे। वे वापस वैसे ही हो जाते हैं। (परमाणु शुद्ध होकर मूल स्वरूप में आ जाते हैं।)

प्रतिक्रमण से असर खत्म हो जाता है

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण के इफेक्ट (असर) से क्या होता है? आपने कहा, कि प्रतिक्रमण से परमाणु शुद्ध नहीं होते तो प्रतिक्रमण से क्या होता है?

दादाश्री : परमाणु तो कब शुद्ध होते हैं कि 'देखते' हैं तब और प्रतिक्रमण से परमाणुओं पर क्या इफेक्ट होता है कि सामने वाले को जो दुःख हो गया है यदि उस पर उसका असर रह जाएगा तो वह बैर बाँधेगा। हो सके तब तक हमारी वजह से वह असर नहीं रहना चाहिए। इसलिए हम चंदूभाई से कहते हैं, 'प्रतिक्रमण करो'। तब फिर सामने वाले पर उसका असर नहीं रहेगा, बस!

अब इन सभी को शुद्ध करने की क्रिया तो नहीं आती इसलिए हम कहते हैं कि प्रतिक्रमण करना तो हो जाएगा शुद्ध। इन्हें किस प्रकार आएगा यह सब? यह तो साइन्टिफिक विज्ञान है! इतनी ज़्यादा जागृति और वह फिर आपको नहीं करना है, चंदूभाई को करना है। आपको तो जानना ही है कि चंदूभाई ने किया या नहीं! अतिक्रमण भी चंदूभाई ही करते हैं न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, अतिक्रमण भी वही करते हैं इसलिए प्रतिक्रमण भी उनसे ही करवाना है?द्धह्यष्ठु

दादाश्री : हाँ, प्रतिष्ठित आत्मा ही अतिक्रमण करता है और प्रतिष्ठित आत्मा को ही प्रतिक्रमण करना है। प्रतिक्रमण 'आपको' नहीं करना है। जो गुनाह करता है उसे करना है। डिस्चार्ज के गुनाह और डिस्चार्ज के प्रतिक्रमण। अतिक्रमण भी डिस्चार्ज का और प्रतिक्रमण भी डिस्चार्ज का।

प्रज्ञाशक्ति करवाती है प्रतिक्रमण

अगर यह प्रतिक्रमण खुद को नहीं करना है तो यह प्रतिक्रमण आप किस से करवाते हैं?

प्रश्नकर्ता : 'चंदूभाई' से करवाना है लेकिन चंदूभाई को कौन कहता है?

दादाश्री : यह भीतर जो प्रज्ञाशक्ति है उस प्रज्ञा की शक्ति ही काम करती रहती है।

प्रश्नकर्ता : जो स्वाभाविक रूप से जा रहा है, उसे वापस मुकाम देता है।

दादाश्री : उससे ज़्यादा गहरे उतरोगे तो भीतर से कीचड़ निकलेगा। यह तो है 'सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स'। गरमी में हर कोई कहता है कि ओढ़ने के लिए कुछ नहीं चाहिए। सभी कहते हैं, लेकिन 'सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' ओढ़ने का मौका ले आता है। गरमी में अंदर से (ठंडा) बुखार चढ़ जाए तो? ओढ़ने की ज़रूरत पड़ती है। यानी यह 'एविडेन्स' है। 'एविडेन्स' को उस तरह से नहीं नाप सकते कि 'गरमी में मना कर रहे थे, अब ओढ़ने का क्यों माँग रहे हो?' 'अरे भाई, बुखार आया है, दे न ओढ़ने को। तू समझता नहीं है।' यह प्रतिक्रमण खुद को नहीं करना है। 'खुद' चंदूभाई से प्रतिक्रमण करवाता है। जो 'खुद' अतिक्रमण नहीं करता है तो उसे प्रतिक्रमण क्यों करना होगा भला?

जब ज्ञान देते हैं तब कहते हैं, 'तू शुद्धात्मा है,' एक्ज़ेक्ट? हाँ। तो अब क्या बचा? वह है तेरा 'व्यवस्थित'। व्यवस्थित का अर्थ क्या है? चंदूभाई क्या करता है उसे देखते रहना है, वह है व्यवस्थित का अर्थ। चंदूभाई किसी का दो लाख का नुकसान कर दे, तब भी हमें देखते रहना है। बाद में समझ में नहीं आता इसलिए कहते हैं 'प्रतिक्रमण कर'। 'व्यवस्थित' यानी जो है उसे एक्ज़ेक्ट देखते रहो। तो आप मुक्त हो गए।

अक्रम में प्रतिक्रमण ज़िम्मेदारी के साथ

प्रश्नकर्ता : एक जन्म तक देखते रहना है, तो प्रतिक्रमण करते-करते देखते रहना है क्या?

दादाश्री : निरंतर ध्यान रहना चाहिए कि 'मैं कुछ भी नहीं करता हूँ'। निरंतर ऐसा ध्यान

रहे तो फिर प्रतिक्रमण नहीं करेंगे तो भी चलेगा। हमें निरंतर ध्यान रहता है। जो हमें रहता है, वही आपको बता रहे हैं। हमें हमेशा रहता है, ज्ञान होने के बाद।

वैसे इस ज्ञान में तो प्रतिक्रमण करना रहता ही नहीं। यह ज्ञान ऐसा अंतिम प्रकार का ज्ञान है कि प्रतिक्रमण करना रहता ही नहीं। यह तो, जिसे गुजराती की चार पुस्तकें (चौथी कक्षा) आती हों, पढ़ा हो, उसे ग्रेज्युएट बना देते हैं तो फिर बीच की स्टैन्डर्ड-(कक्षाओं) का क्या होगा भला? इसलिए बीच में इतना हमने अपनी ज़िम्मेदारी से रखा है। नहीं तो इस ज्ञान में ऐसा नहीं होता।

शुद्धात्मा के अलावा बाकी सारा कचरा ही है। उसमें से एक, क्रमण और दूसरा, अतिक्रमण। जो-जो शुद्धात्मा के बाहर का है, वे सब ही दोष हैं और उनका प्रतिक्रमण करना होगा।

इसलिए यदि दोष नहीं होते हों तो प्रतिक्रमण करने की ज़रूरत ही नहीं है। प्रतिक्रमण तो जब आपसे दोष हो जाए तब करना। सामने वाला कहे कि 'साहब, दोष हों ही नहीं, इतनी अधिक मेरी शक्ति नहीं है। दोष तो हो जाते हैं।' तब तो हम कहेंगे कि, अगर 'शक्ति नहीं है तो प्रतिक्रमण करना।'

समझो संयोगाधीन ज्ञानी के आशय को

प्रश्नकर्ता : आपकी वाणी निमित्त अधीन है न, इसलिए बहुत बार 'दादा' प्रतिक्रमण करने को मना करते हैं, बहुत बार प्रतिक्रमण करने को कहते हैं, तो यह कैसा है?

दादाश्री : ऐसा हम नहीं कहते कि प्रतिक्रमण करने की ज़रूरत नहीं है और वह तो किसी दफा कहा हों तो उसका कोई खास ऐसा महत्व नहीं होता। ऐसे संयोग होते हैं। वह वाणी तो संयोगानुसार होती है।

प्रश्नकर्ता : इसलिए यह 'पज़ल' खड़ी हो गई है।

दादाश्री : नहीं, पज़ल खड़ी करने की ज़रूरत ही नहीं है। हमारा वाक्य हमेशा एक तरफा नहीं होता। सब संयोग के अनुसार होता है और सामने वाले के संयोगों पर आधारित होता है!

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : और अगर ऐसा कोई हो, जो ऊब जाए तब ऐसा करके भी उसे हम आगे लाते हैं। अब सामने वाला ऐसा हो कि ऊब जाए और ऊपर से यह प्रतिक्रमण का बोझ डाल दें तो? इसलिए उसे हम कहते हैं कि यह करने की ज़रूरत नहीं है। तू तेरा बाकी का सब कर। ऐसा करके हम उसे आगे चलाते हैं। यानी हम संयोग अनुसार वाणी बोलते हैं लेकिन मूल अभिप्राय तो हमारा यही रहता है कि 'प्रतिक्रमण करना चाहिए'।

प्रश्नकर्ता : उसका उल्लास टूट न जाए, इसलिए... ?

दादाश्री : वह इतना कर रहा हो और उसमें फिर प्रतिक्रमण आ जाए, तब उससे बोझ सहन नहीं हो पाता तो वह सबकुछ फेंक देता है इसलिए मुझे सब को अलग-अलग तरह का कहना पड़ता है।

अर्थात् जब हम बाद में कह देते हैं कि 'हमारी वाणी संयोगों के अधीन होती है, संयोग के अनुसार।' तब लोग उसे उल्टा नहीं पकड़ते। लेकिन जिसे उल्टा पकड़ना हो, उसे वह सब मिल जाता है। यदि वह उल्टा पकड़े तो उसमें भी हर्ज नहीं है। जो उल्टा पकड़ता है, वही

उस उल्टे को निकाल फेंकता है। यह विज्ञान ही ऐसा है कि यदि वह उल्टा पकड़ ले न तो फिर वही उसे चुभता है। इसलिए उसकी हमें वरीज़ (चिंता) नहीं रखनी हैं।

इसलिए हमने क्या कहा है कि अतिक्रमण किया इसलिए प्रतिक्रमण करो और यदि प्रतिक्रमण हो रहा हो तो देखते रहो।

माफी माँगता है प्रतिष्ठित आत्मा

प्रश्नकर्ता : यह जो क्षमा माँगता है, वह क्षमा प्रतिष्ठित आत्मा ही माँगता है न?

दादाश्री : हाँ, मूल आत्मा को माँगने की ज़रूरत ही क्या है? जो गुनाह करता है, उसे माँगने की ज़रूरत है। प्रतिष्ठित आत्मा ने गुनाह किया है, इसलिए प्रतिष्ठित आत्मा माफी माँगता है।

यह अतिक्रमण तो क्या, चंदूभाई बाकी सब भी करता है! उसमें आत्मा कुछ नहीं करता। वह तो सिर्फ प्रकाश ही देता है।

महावीर ने भी देखा निज *पुद्गल* को ही

(आत्मा होने के बाद) किस प्रकार का भय आ सकता है? ऐसा लगता है?

प्रश्नकर्ता : मुझे क्या भय आ सकता है? अब आपको सब सौंपने के बाद उसका मुझे क्या करना है?

दादाश्री : लेकिन आपको किसी प्रकार की घबराहट तो नहीं रहती न? यदि यह सौंप दिया हो तो किंचित्मात्र घबराहट नहीं रहती और थरथराहट भी नहीं रहती, ऐसा सुंदर है। जितना आपको सौंपना आया उतना काम का। यह सौंपकर फिर आराम से खाओ न, टेबल पर बैठकर! कोई बाप भी नहीं डाँटने वाला। कोई *ऊपरी* (बॉस) है ही नहीं। *ऊपरी* जो थे वे आपकी भूलें और आपके 'ब्लन्डर्स' थे। 'ब्लन्डर्स' दादा ने तोड़ दिए और 'भूलें' हमें धोनी पड़ेगी। थोड़ी-बहुत, पाँच-दस, किसी दिन भूलें दिखाई देती हैं क्या?

प्रश्नकर्ता : थोड़ी-थोड़ी दिखने लगी हैं, पाँच-पाँच, दस-दस भूलें दिखाई देती हैं और उनके लिए क्षमा माँगता हूँ।

दादाश्री : नहीं, उसके लिए प्रतिक्रमण करना पड़ेगा। अभी कोई आचार्य महाराज हों, वे कहेंगे कि 'आप आत्मज्ञान पा लेने के बाद प्रतिक्रमण क्यों करते हो?' लेकिन यह अक्रम मार्ग है इसलिए हमें क्या करना है? खुद को नहीं करना है। आपको चंदूभाई से कहना है कि, 'चंदूभाई, आपने यह अतिक्रमण किया है, इसलिए प्रतिक्रमण करो।' क्योंकि 'हम' तो छूट (मुक्त हो) गए लेकिन जब ये 'चंदूभाई' छूट जाएँगे तब 'हम' छूट पाएँगे इन परमाणुओं को साफ करके भेजना पड़ेगा। 'अपने' निमित्त से ऐसे बिगड़े हैं।

प्रश्नकर्ता : चंदूभाई का झमेला (उलझन) खड़ा है अभी, उसे शुद्ध करो।

दादाश्री : हाँ, वह इन दादा की विधि करता है, वह आत्मा विधि नहीं करता। हमें चंदूभाई से कहना है कि 'भाई, दादा की विधि कर लो। अभी तो हमें स्वच्छ करना है।' हमें आत्मा की तरह रहकर जानते रहना है कि आज दादा की विधि की, कैसी की, कैसी नहीं, वह सब हमें जानते रहना है।

निरंतर जानना वह 'अपना' काम और निरंतर करना वह 'चंदूभाई' का काम। 'चंदूभाई' नौकर और 'हम' सेठ। हाँ!

प्रश्नकर्ता : अच्छा हुआ, मैं सेठ बन गया, जम गया यह तो!

दादाश्री : हाँ, और फिर 'चंदूभाई' नौकर इसलिए अब आपको रौब जमाना है और कहना है कि 'टेबल पर बैठकर खाओ 'चंदूभाई' खाओ। रौब से खाओ। अब हम हैं आपके साथ'। तब कहेगा, 'महाराज मना कर रहे थे न'। तब कहना, 'महाराज मना करें लेकिन आप रौब से खाओ। हमें अब दादा मिले हैं, टेबल का उपयोग करो'! नहीं हो तो ले आना!

जिसने अतिक्रमण किया है उसी से प्रतिक्रमण करवाना है। 'हमें' नहीं करना है। हम उसे जानने वाले। चंदूभाई क्या कर रहे हैं, आप उसे जानने वाले फिर क्या हर्ज है? भगवान महावीर भी यही करते थे। भगवान महावीर एक ही *पुद्गल* को देखते रहते थे, निरंतर। इन सब लोगों के *पुद्गल* देखने नहीं जाते थे। एक (अपना) ही *पुद्गल* देखते थे।

प्रतिक्रमण से होता है साफ

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसा होता है कि यह मेरा नहीं है फिर भी वहाँ पकड़ लेते हैं।

दादाश्री : उसमें हर्ज नहीं है। वह किसने पकड़ा?

प्रश्नकर्ता : हम जानते हैं कि यह चीज़ गलत है, नहीं करनी चाहिए फिर भी हो जाती है।

दादाश्री : लेकिन चंदूभाई से हुआ, ऐसा कहा जाएगा न! हम कहाँ करते हैं?

प्रश्नकर्ता : तब हमें ऐसा हो जाता है कि इन 'चंदूभाई' में कितनी नालायकी भरी है?

दादाश्री : 'चंदूभाई' ने किया है इसलिए पकड़े जाते हैं इसलिए बलपूर्वक कहना है, 'प्रतिक्रमण करो' अतिक्रमण क्यों किया? इसलिए प्रतिक्रमण करो। चंदूभाई पकड़े जाते हैं, 'आप' तो नहीं पकड़े जाते न?

आपको तो पड़ोसी की तरह चंदूभाई से ऐसा कहना है, कि ''ऐसे दोष करके क्या आप छूट सकोगे? 'आपको' हम से अलग होना है और 'आपको' साफ-सुथरा होना है। इसलिए आप प्रतिक्रमण करो।'' अतिक्रमण हो जाए तो प्रतिक्रमण करना। अच्छा हुआ तो प्रतिक्रमण नहीं करना है।

प्रतिक्रमण से पकड़ छूटती जाती है

प्रश्नकर्ता : कुछ प्रकार की जो पकड़ पकड़ी हुई हों उन्हें हम जानते हैं कि वे गलत हैं, ऐसा नहीं होना चाहिए। इच्छा नहीं हो फिर भी वैसी पकड़, पकड़ लेते हैं। बाद में पछतावा होता है, प्रतिक्रमण होता है लेकिन वे पकड़ छूटती क्यों नहीं?

दादाश्री : उन्हें हम प्रतिक्रमण करके छोड़ते हैं और छूट जाते हैं। प्रतिक्रमण करने से छूट जाता है। जैसे-जैसे उसके प्रतिक्रमण करते हैं, वैसे-वैसे वह अलग (पृथक) होती जाती है। जितने प्रतिक्रमण करते हैं उतनी दूर होती जाती है।

प्रश्नकर्ता : फिर दादा के फोटो के पास आकर रोती भी हूँ।

दादाश्री : हाँ, लेकिन जितने प्रतिक्रमण करते हैं, उतने ही अलग। एक प्रतिक्रमण किया और धक्का मारा, दूसरा प्रतिक्रमण किया और धक्का मारा। इस प्रकार जैसे-जैसे दूर होता जाएगा, वैसे-वैसे कम होता जाएगा। ये बहन अब तीन महीने में एक बार ही घर में बखेड़ा करती है। पहले रोज़ दो-चार बार करती थी यानी नब्बे दिन

में तीन सौ साठ बार करती थी। उसके बजाय अब एक बार ही करती है! आपका भी ऐसा हो जाएगा। इसी की तरह दूसरी एक बहन भी रोज़ घर में झगड़ा करती थी। उल्टा-उल्टा बोलती रहती थी। ये प्रतिक्रमण करने से ही उसका अलग होने लगा। वह रोज़ प्रतिक्रमण करती है।

प्रतिक्रमण विलय करता है भौतिक इच्छाएँ

प्रश्नकर्ता : इस संसार की एक भी चीज़ नहीं भोगनी, ऐसा निश्चय है लेकिन जब अंदर से कोई ऐसी इच्छा निकलती है तो उस अनुसार बरताव हो जाता है, तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : 'इस जगत् में कोई भी विनाशी चीज़ मुझे नहीं चाहिए।' ऐसा आपने नक्की किया है न? फिर भी क्यों याद आता है? इसलिए प्रतिक्रमण करो। प्रतिक्रमण करते-करते फिर से वापस याद आए, तब हमें समझना चाहिए कि अभी तक यह शिकायत बाकी है! इसलिए फिर से प्रतिक्रमण ही करना है।

प्रश्नकर्ता : वह तो दादा, जब तक उनका बाकी रहे, तब तक प्रतिक्रमण होते ही रहते हैं। उसे बुलाना नहीं पड़ता।

दादाश्री : हाँ, बुलाना नहीं पड़ता। हम ने नक्की किया हो तो वे अपने आप होते ही रहते हैं। 'चंदूभाई' क्या करते हैं? जो कुछ भी करते हैं, उसे 'हमें' 'देखते' रहना है, वह पुरुषार्थ कहलाता है। 'देखना' चूक गए, वह प्रमाद।

प्रश्नकर्ता : 'देखते' रहना वह शुद्धात्मा का काम है?

दादाश्री : स्वरूप का ज्ञान होने के बाद वह काम होता है, उसके बिना नहीं होता।

याद क्यों आया? बिना कारण के याद नहीं आता है, उसकी कोई भी शिकायत होगी तभी आएगा। जो याद आए, बैठे-बैठे उसका 'प्रतिक्रमण' करना है, और कुछ भी नहीं करना है। जिस रास्ते हम छूटे हैं, वही रास्ते आपको बता दिए हैं। अत्यंत आसान और सरल रास्ते हैं, नहीं तो, इस संसार से छूटा नहीं जा सकता। हमें क्यों कुछ याद नहीं आता? इसलिए जो-जो याद आता है उसका प्रतिक्रमण करना। माफी माँगना कि नई इच्छा नहीं होने पर भी यह गुनाह किया उसके लिए क्षमा माँगता हूँ।

प्रतिक्रमण पौद्गलिक है लेकिन है पुरुषार्थ

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण को पौद्गलिक कहा है तो वह 'व्यवस्थित' के अधीन हुआ न?

दादाश्री : नहीं। प्रतिक्रमण वह आत्मा नहीं है, वह पौद्गलिक है लेकिन वह पुरुषार्थ है, जागृति के अधीन है। जागृति वही पुरुषार्थ है। जागृति रहे तो फिर करना नहीं पड़ता, होता रहता है।

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण में ऐसा करता हूँ कि अनंत जन्मों के *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) के पर्याय किए हों, अंतराय किए हों, उनके लिए प्रतिक्रमण करता हूँ।

दादाश्री : हम तो दोषों का प्रतिक्रमण करते हैं, उसमें *पुद्गल* पर्याय आ ही जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : *पुद्गल* का जो होता रहता है वह व्यवस्थित के नियम अनुसार होता रहता है लेकिन वह अतिक्रमण कैसे कर सकता है?

दादाश्री : क्रमण कर सकता है और अतिक्रमण भी कर सकता है। सबकुछ वही करता है न?

प्रश्नकर्ता : उस *पुद्गल* में आत्मा का चेतन मिल जाए तभी होगा न?

दादाश्री : उसी को *पुद्गल* कहते हैं। ये जो *पुद्गल* परमाणु हैं, उन्हें तो हम *पुद्गल* कहते हैं, सिर्फ उतना ही है। उस *पुद्गल* को तो भगवान ने 'मिश्रचेतन' कहा है। *पुद्गल* परमाणु क्या है? मिश्रचेतन, चैतन्यभाव से भरा हुआ, उसका *पूरण* (चार्ज होना) होना, वह दूसरे जन्म में *गलन* (डिस्चार्ज होना) हो जाता है। वापस 'चार्ज' होता है। *पूरण* से 'चार्ज' होता है और *गलन* से 'डिस्चार्ज' होता है और अतिक्रमण, वह *गलन* है। ज्ञान के बाद भी यदि अतिक्रमण आत्मा द्वारा होता है तो *पूरण* है। कर्ताभाव से हुआ हो तो *पूरण* है। कर्ताभाव के बिना हुआ हो तो *गलन* है।

प्रश्नकर्ता : यह सब चंदूभाई करते हैं तो उन्हें तो राग वगैरह कुछ नहीं होता तो फिर उन्हें अतिक्रमण क्या और प्रतिक्रमण क्या?

दादाश्री : राग-द्वेष सब चंदूभाई (बावा) को ही हैं।

माफी कौन किससे माँगता है?

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं कि 'हम शुद्धात्मा है, इसलिए हमें प्रतिक्रमण नहीं करना है। जिसने अतिक्रमण किया है, उसे करना है'। उसने भी शुद्धात्मा के प्रति नहीं किया है, वह सामने वाले के *पुद्गल* के प्रति होता है। तो प्रतिक्रमण में हम जो माफी माँगते हैं, वह माफी सामने वाले के शुद्धात्मा से माँगनी है या उसके *पुद्गल* से माफी माँगनी है?

दादाश्री : शुद्धात्मा से माफी माँगनी है। फिर वह माफी माँगने वाला कौन है? *पुद्गल*। और वह सामने वाले के शुद्धात्मा से माँगनी है। 'हे शुद्धात्मा भगवान! आपकी साक्षी में माफी माँगता हूँ।'

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, हम बोलते हैं कि, 'मन-वचन-काया से बिल्कुल भिन्न ऐसे शुद्धात्मा!' तो फिर *पुद्गल* का क्यों कहलाता है?

दादाश्री : वह तो शुद्धात्मा से माफी माँगता है कि मुझ से यह भूल हो गई, उसके लिए माफी माँगता हूँ।

प्रश्नकर्ता : लेकिन माफी शुद्धात्मा से माँगनी है और प्रतिक्रमण *पुद्गल* का करना है?

दादाश्री : नहीं, प्रतिक्रमण और माफी, दोनों एक ही चीज़ है। उसके शुद्धात्मा से माफी माँगनी है कि आपके प्रतिष्ठित आत्मा के प्रति मुझ से जो भूल हुई है, उसके लिए माफी माँगता हूँ।

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण सिर्फ औरों के लिए ही नहीं बल्कि खुद अपने लिए भी हो सकता है?

दादाश्री : खुद का तो अपने शुद्धात्मा के समक्ष करना है। हमें क्या कहना है कि 'हे चंदूभाई, प्रतिक्रमण करो, भाई आप क्यों ऐसी भूलें करते हो?

यह जो पैकिंग है, वह आत्मा के प्रतिबिंब जैसा हो जाना चाहिए। सो इस पैकिंग को भी भगवान जैसा बनाना है। इसलिए प्रतिक्रमण करना है न!

रिलेटिव कपड़े को साफ रखना

प्रश्नकर्ता : वह जो भीतर चंदूभाई से कहता है कि 'आपने यह भूल की है, इसलिए प्रतिक्रमण करो' तो वह कहने वाला कौन है? कौन ऐसा कहता है?

दादाश्री : वह अपनी प्रज्ञा नाम की जो शक्ति है न, वह सचेत करती है कि आप यह प्रतिक्रमण करो। वह 'रियल' में से उत्पन्न होने वाली शक्ति है। दो तरह की शक्तियाँ हैं। रियल में से उत्पन्न होने वाली शक्ति है प्रज्ञा और रिलेटिव में से उत्पन्न होने वाली शक्ति अज्ञा कहलाती है। अज्ञा संसार के बाहर निकलने ही नहीं देती और प्रज्ञा तो मोक्ष ले जाने तक छोड़ती ही नहीं। जिस समय यहाँ से शरीर छूटा और मोक्ष की तैयारी हुई, उसी समय प्रज्ञा आत्मा में समाविष्ट हो जाती है, वह कोई अलग शक्ति नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यानी अहंकार 'रिलेटिव' में ही आता है न?

दादाश्री : वह सब रिलेटिव में ही आता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, रियल और रिलेटिव दोनों अलग हैं, तो फिर हमें बीच में मिलने की क्या ज़रूरत आ पड़ी? प्रतिक्रमण करने की क्या ज़रूरत है? हमें रिलेटिव में पड़ने की क्या ज़रूरत?

दादाश्री : 'रिलेटिव' में पड़ने की ज़रूरत नहीं है लेकिन सामने वाले को दुःख हो गया इसलिए 'हमें' चंदूभाई से (अपने आपको) कहना चाहिए कि, 'भाई, इसे दुःख क्यों दिया? इसलिए आप प्रतिक्रमण करो।' बस, यानी धो डालना है। दाग़ गिरे कि धो डालना है। हमें 'रिलेटिव' कपड़ा (फाइल नं वन को) भी साफ रखना है।

प्रश्नकर्ता : दादा, यह जो दुःख देता है, वह रियल देता है क्या?

दादाश्री : 'रियल' तो कुछ करता ही नहीं है। सब 'रिलेटिव' में ही है और दुःख भी 'रिलेटिव' को ही पहुँचता है, 'रियल' को पहुँचता ही नहीं है।

अतिक्रमण के दाग़ धुलते हैं प्रतिक्रमण से

प्रश्नकर्ता : यह जो दुःख होता है, वह सामने वाले के अहंकार को होता है?

दादाश्री : हाँ, अहंकार को दुःख हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : तो प्रतिक्रमण करने की क्या ज़रूरत है? वापस रिलेटिव में जाने की क्या ज़रूरत है?

दादाश्री : लेकिन उसे दुःख हो गया है, उसका दाग़ अपने रिलेटिव पर रहेगा न! उस रिलेटिव को दाग़ वाला नहीं रखना है। अंत में साफ करना पड़ेगा। इस कपड़े को साफ रखना है। क्रमण से हर्ज नहीं है। क्रमण यानी ऐसे यों ही मैला हो जाए उसमें हर्ज नहीं है। मैला होता है उसमें हर्ज नहीं है लेकिन दाग़ पड़ जाए तो उसे तुरंत धो देना है।

प्रश्नकर्ता : यानी 'रिलेटिव' को साफ रखना ज़रूरी है?

दादाश्री : ऐसा नहीं है। 'रिलेटिव' पुराना होगा, कपड़ा पुराना हो जाए उसमें हर्ज नहीं है लेकिन अतिक्रमण से एकदम दाग़ पड़ जाए तो वह हमारे विरुद्ध कहा जाएगा इसलिए उस दाग़ को धो देना चाहिए। यानी इस प्रकार से अतिक्रमण हो जाए तो उसका प्रतिक्रमण करो। वह कभी-कभार होता है, रोज़ नहीं होता और यदि प्रतिक्रमण नहीं हो पाए तो कोई बहुत बड़ा गुनाह नहीं है लेकिन प्रतिक्रमण करना अच्छा है।

प्रश्नकर्ता : अतिक्रमण करने की सत्ता अपने हाथ में नहीं है तो प्रतिक्रमण करने की सत्ता अपने हाथ में कैसे हो सकती है?

दादाश्री : अतिक्रमण की सत्ता नहीं है। लेकिन यह प्रतिक्रमण तो भीतर चेतावनी देता है, भीतर जो चेतन है न, प्रज्ञाशक्ति, वह चेतावनी देती है।

स्थूल और सूक्ष्म में प्रतिक्रमण

प्रश्नकर्ता : तो फिर प्रतिक्रमण कौन करता है?

दादाश्री : जो अतिक्रमण करता है, उसी से प्रतिक्रमण करवाए जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : यहाँ पर मुझे स्थूल बात बताइए न, कि यह प्रतिक्रमण शरीर करता है न? मैं चंदूभाई के पास जाकर कहूँ कि, 'मैंने आपको कल (दुःख) दिया था, मुझे माफ करो।' वहाँ जाकर वह प्रतिक्रमण शरीर करता है यानी यह स्थूल चीज़ हुई, तो उसमें सूक्ष्म चीज़ कौन सी है?

दादाश्री : क्यों? अंदर जो प्रतिक्रमण करने का भाव हुआ, वह सूक्ष्म है और बाहर जो हुआ वह स्थूल है। यह स्थूल नहीं हो सके तो चलेगा। सूक्ष्म कर ले तो बहुत हो गया। जिसने अतिक्रमण किया है उसी से प्रतिक्रमण करवाना है कि, 'भाई, तू कर। तूने अतिक्रमण किया है, इसलिए तू प्रतिक्रमण कर। तू प्रतिक्रमण कर और शुद्ध हो जा।' यों इस अतिक्रमण वाले को तोड़ देना है कि 'भाई, अब क्यों ऐसा करते हो?' प्रतिक्रमण के जैसा और कोई रास्ता नहीं है।

यदि 'साइन्टिफिक' रूप से यह ज्ञान रहता हो तो मौन रहने में भी हर्ज नहीं है लेकिन लोगों को 'साइन्टिफिक' रूप से रह नहीं पाता इसलिए आपको ऐसा कुछ बोलना चाहिए। क्योंकि जो बोलता है वह शुद्धात्मा नहीं (बोलता) है, वह तो प्रज्ञा नामक शक्ति बोलती है। यानी शुद्धात्मा तो बोलता ही नहीं है न! यानी प्रज्ञा नामक शक्ति कहती है कि 'ऐसा क्यों करते हो? ऐसा नहीं होना चाहिए।' इतना कहा तो बहुत हो गया। या फिर यदि ऐसा वर्तन हो जाए कि किसी को बुरा लगा तो प्रज्ञा नामक शक्ति चंदूभाई से कहती है कि 'आप प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान करो।' बस इतना ही। इसमें कुछ कठिन है क्या?

आज्ञा पालन करने से नहीं होगा परभाव में तन्मयाकार

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में यदि अतिक्रमण हो जाता है तो तुरंत प्रतिक्रमण कर लेना है, आपने ऐसा सुझाव दिया है लेकिन यदि निज-स्वभाव में से परभाव या परद्रव्य में खिंच जाएँ या उसमें तन्मयाकार हो जाएँ तो क्या करना है? परभाव में तन्मयाकार होना, उसे शुद्धात्मा का अतिक्रमण करना कहेंगे?

दादाश्री : हमें प्रतिक्रमण करना है। फिर क्या लिखते हैं कि 'निज-स्वभाव में से परभाव में जाना होगा।' अब जो हमारी आज्ञा का पालन करता है वह व्यक्ति परभाव में नहीं जा सकता और यदि उसे जाना हो तो भी नहीं जा पाएगा। इसलिए आज्ञा पालन शुरू कर दो, तो परभाव में जा ही न पाएँ। परद्रव्य में खिंचें ही नहीं। इसलिए घबराना नहीं। उसमें तन्मयाकार हो जाए तो वह परभाव में या परद्रव्य में नहीं है, यदि आज्ञा पालन करता है तो यह नहीं है और अगर यह है तो आज्ञा का पालन नहीं किया जा सकता। इतना वैज्ञानिक है यह तो।

प्रश्नकर्ता : तन्मयाकार हो जाने से जागृति पूर्वक पूर्णत: *निकाल* नहीं होता। अब तन्मयाकार हो जाने के बाद पता चले तो फिर उसका प्रतिक्रमण करके *निकाल* करने का रास्ता है क्या?

दादाश्री : प्रतिक्रमण करने से हल्के हो जाएँगे। अगली बार हल्के होकर आएँगे और यदि प्रतिक्रमण नहीं करता तो वही बोझ वापस आएगा। फिर से छटक जाता है वापस, चार्ज हुए बगैर यानी प्रतिक्रमण से हल्का कर करके बाद में *निकाल* होता रहेगा।

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं कि अतिक्रमण न्यूट्रल है तो फिर प्रतिक्रमण करने को रहा ही कहाँ?

दादाश्री : अतिक्रमण न्यूट्रल ही है लेकिन 'उसमें (अज्ञानदशा में खुद चंदू होकर) तन्मयाकार हो जाता है' इसलिए बीज गिरता है। लेकिन (ज्ञान के बाद) अतिक्रमण में (खुद) तन्मयाकार नहीं होता तो बीज नहीं गिरता। अतिक्रमण (आपका) कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता और प्रतिक्रमण तो यदि तन्मयाकार नहीं हों तो भी (चंदूभाई) 'करता है।' चंदूभाई तन्मयाकार हो जाएँ, उसे भी आप जानते हो और नहीं हों उसे भी आप जानते हो। आप तन्मयाकार होते ही नहीं हो। तन्मयाकार तो मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार हो जाते हैं, उसे आप जानते हो। तन्मयाकार तो चंदूभाई होते हैं, आप तो उसे जानने वाले हो।

प्रतिक्रमण कॉज़ेज़ को खत्म करता है

प्रश्नकर्ता : हमने कुछ भूल की हो और फिर हमें पता चले तो फिर हम उसका प्रतिक्रमण करते हैं। तो इस प्रतिक्रमण को करने से हम दोष मुक्त कैसे हो जाते हैं?

दादाश्री : यह जो भूल हो जाती है, वह तो परिणाम है, 'रिज़ल्ट' है और दोष के कारण कौन से थे? वे कारण बुरे थे, इसलिए हम भी प्रतिक्रमण करते हैं। उसके परिणाम के लिए नहीं, उसका परिणाम तो चाहे कुछ भी आए। यानी हम सब दोषों के कॉज़ को खत्म करते हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी यह प्रतिक्रमण कॉज़ेज़ के लिए है?

दादाश्री : हाँ, यह प्रतिक्रमण कॉज़ेज़ को मारता है, रिज़ल्ट को नहीं मारता। यह समझ में आ गया न?

हम ने किसी का नुकसान किया, बाद में हम प्रतिक्रमण करते हैं, अब जो नुकसान हो गया, मान लो कि वह तो 'इफेक्ट है, रिज़ल्ट है। हमारा नुकसान करने का जो इरादा था, वह कॉज़ है। तो प्रतिक्रमण करने से वह इरादा टूट गया। यानी प्रतिक्रमण उन कॉज़ेज़ को तोड़ता है। बाकी जो घटना घटी, वह तो रिज़ल्ट है। प्रतिक्रमण से वह स्वच्छ हो जाता है। यह तो 'साइन्टिफिक इन्वेन्शन' (वैज्ञानिक खोज) है!'

प्रश्नकर्ता : यह जो प्रतिक्रमण करते हैं, तो यह प्रतिक्रमण कैसे कार्य करता है जिससे कि अपने दोष धुल जाते हैं और हमें प्योर फोर्म (शुद्ध रूप) में ले आता है? वह प्रतिक्रमण उसके शुद्धात्मा के पास जाता है और सब 'वाइप' (साफ) कर आता है या फिर क्या है इसमें?

दादाश्री : ऐसा है न, बटन दबाने से लाइट होती है और दुबारा बटन दबाते हैं तो लाइट बंद हो जाती है। उसी तरह से यदि कुछ दोष हो जाए और प्रतिक्रमण करें तो इससे दोष बंद हो जाता है।

भाव परिवर्तन होता है प्रतिक्रमण से

जिसे दोष दिखने लगे, पाँच दिखे तब से ही समझना कि अब निबेड़ा आने वाला है।

जितने दोष दिखे, वे दोष गए! तब कोई कहेगा, वैसा का वैसा दोष फिर से दिखता है। वास्तव में वही दोष फिर से नहीं आता। यह तो एक-एक दोष प्याज़ की परतों की तरह अनेक परतों वाले होते हैं। यानी जब एक परत उखड़े, तब हम प्रतिक्रमण करके निकाल देते हैं, तब दूसरी परत आकर खड़ी रहती है, वही की वही परत फिर से नहीं आती। तीस परतें थीं, उनमें से उनतीस रही। उनतीस में से एक परत जाएगी तब अट्ठाइस रहेंगी। ऐसे घटती जाएँगी और अंत में वह दोष खत्म हो जाएगा!

किसी के प्रति भी अतिक्रमण हुए हों तो पूरा दिन उसके लिए प्रतिक्रमण करने पड़ेंगे, तभी खुद छूट सकेगा। यदि दोनों ही आमने-सामने प्रतिक्रमण करेंगे तो जल्दी छूटा जा सकेगा। पाँच हज़ार बार आप प्रतिक्रमण करो और पाँच हज़ार बार सामने वाला प्रतिक्रमण करे तो जल्दी अंत आ जाएगा लेकिन यदि सामने वाला नहीं करे और तुझे छूटना ही हो तो दस हज़ार बार प्रतिक्रमण करने पड़ेंगे, तो तू खुद तो छूटेगा लेकिन वन साइडेड प्रतिक्रमण होने से खुद के लिए सामने वाले को दुःख रहेगा ही। फिर भी इस प्रतिक्रमण से तो आपके प्रति सामने वाले के भाव भी बदल जाएँगे, खुद को भी अच्छे भाव होंगे और सामने वाले को भी अच्छे भाव होंगे क्योंकि प्रतिक्रमण में तो इतनी अधिक शक्ति है कि बाघ, कुत्ते जैसा बन जाता है! प्रतिक्रमण कब काम आता है? जब कुछ उल्टे परिणाम खड़े हो जाएँ, तभी काम आता है। बाघ अपनी गुफा में हो और तू अपने घर पर हो, तब तू प्रतिक्रमण करे तो बहुत काम नहीं आएँगे, लेकिन अगर बाघ सामने 'खाऊँ, खाऊँ' कर रहा हो और उस समय प्रतिक्रमण करेगा तो यथार्थ फल देंगे! बाघ तुरंत ही बकरी जैसा हो जाएगा!

दो प्रकार के आलोचना-प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान इस अनुसार हैं - एक तो व्यवहार के (द्रव्य प्रतिक्रमण), ये सभी साधु वगैरह करते हैं, उससे गाँठों की प्रगाढ़ता कम होती है, लेकिन भूल होने पर तुरंत ही करे तो और भी उच्च प्रकार का फल मिलता है। दूसरे, निश्चय के (भाव प्रतिक्रमण) जो कि अपने स्वरूपज्ञान प्राप्त महात्मा करते हैं, वे।

आज्ञापूर्वक के प्रतिक्रमण

यह प्रतिक्रमण करने से बहुत शक्तियाँ खिलती हैं लेकिन यदि हमारी आज्ञा से करे तो।

प्रश्नकर्ता : वह कैसे और कब?

दादाश्री : हमारी आज्ञा लेकर कर आए तो काम *निकाल* लेगा। खास तौर पर इस यात्रा में। ऐसे संयोगों में भी आज्ञा से करना है।

1973 में हम सब 38 दिन की यात्रा पर गए थे। वहाँ भी हमारा तो नॉ लॉ (कोई नियम नहीं।) तब फिर ऐसा नहीं कि किसी से लड़ना नहीं है। जिसके भी साथ लड़ना हो उसके साथ लड़ने की छूट है। तो लड़ने की छूट देनी है, ऐसा भी नहीं और नहीं देनी है, ऐसा भी नहीं। यदि वे लड़ते थे तो 'हम' देखते थे लेकिन वापस रात को सब 'हमारी' साक्षी में प्रतिक्रमण द्वारा धो देते थे! आमने-सामने दाग़ लगते थे और फिर धो देते थे! यह प्योर 'वीतराग मार्ग' है, इसलिए यहाँ केश-नक़द प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। इसमें पाक्षिक या मासिक प्रतिक्रमण नहीं होते। दोष हुआ कि तुरंत ही प्रतिक्रमण।

प्रश्नकर्ता : यों तो जागृति है कि 'शुद्धात्मा हूँ' लेकिन फिर भी वह पहले का...

दादाश्री : जो कचरा है, अगर वह भीतर

से नहीं निकलेगा तो भीतर ही रह जाएगा, उसके बजाय निकले तो अच्छा इसलिए हम जब यात्रा पर निकले थे न, तब हमारे कुछ पटेल और दूसरे आपके जैसे बनिए थे, वे एक-दूसरे से इतना लड़ते थे तो सब मुझे क्या कहते, कि 'दादाजी, इन्हें छुड़वाइए न! ये लोग इतने उल्टे शब्द बोलते हैं, बहुत झगड़ रहे हैं।' तब मैंने कहा, 'मेरी हाज़िरी में लड़ रहे हैं तो निवारण हो जाएगा न। जल्दी से पार लग जाएँगे और कुछ बंधेगा नहीं बेचारों को इसलिए तो मार-पीट कर रहें हों तो भले ही मारने दो कि 'मारो जम के।' ऐसा कहता, 'मारना, जम के।' वह तो अगर भीतर है तभी मारोगे। अगर भीतर है ही नहीं, तो कैसे मार पाओगे?

इस तरह पूरे दिन बस में तूफान चलता रहता था तो ड्राइवर ने मुझ से ऐसा कहा कि 'साहब, आप तो भगवान जैसे हैं। ऐसे लोगों से आपको प्रेम कैसे हो गया?' मैंने कहा, 'ये सब लोग अच्छे ही हैं। एक दिन सुधरेंगे।'

फिर शाम को सब आरती करते थे मिलकर, 'दादा भगवान' की! बस में ही! वे मारपीट करते थे लेकिन वापस सब मिलकर पूरी आरती गाते थे और बाद में प्रतिक्रमण करते थे। वे सब जो लड़ाई-झगड़ा कर रहे थे, वे आमने-सामने पैर छूकर नमस्कार करते थे। इसलिए वह ड्राइवर कहता था कि, 'ऐसा तो मैंने दुनिया में किसी को नहीं देखा' तुरंत ही वापस प्रतिक्रमण करते थे। रोज़ एक बार प्रतिक्रमण करते थे। जितना लड़ते उतना ही प्रतिक्रमण और वह भी पैर छूकर। देखो अब है कोई झंझट?

प्रतिक्रमण रूपी विचार (साधन)देते हैं। हमारी आज्ञा से प्रतिक्रमण करोगे तो तुरंत ही कल्याण हो जाएगा। पाप भुगतने पड़ेंगे लेकिन इतने नहीं।

हमारे प्रतिक्रमण, दोष होने से पहले ही

प्रश्नकर्ता : मुझे तो आपकी एक बात पसंद आई थी, आपने कहा था कि हमारे प्रतिक्रमण दोष होने से पहले ही हो जाते हैं।

दादाश्री : हाँ, ये प्रतिक्रमण 'शूट ऑन साइट' होते हैं। दोष होने से पहले ही शुरू हो जाते हैं अपने आप। हमें पता भी नहीं चलता कि कहाँ से शुरू हो गया! क्योंकि वह जागृति का फल है और संपूर्ण जागृति उसी को कहते हैं केवलज्ञान। और क्या? जागृति ही मुख्य चीज़ है।

हमने अभी इन संघपति के प्रति अतिक्रमण किया, उसके लिए हमारा प्रतिक्रमण भी हो गया। हमारा प्रतिक्रमण साथ में ही होता है। कहते भी रहते हैं और प्रतिक्रमण भी करते रहते हैं। कहेंगे नहीं तो गाड़ी नहीं चलेगी।

प्रश्नकर्ता : दादा, हमारे साथ भी कई बार ऐसा होता है, कि कह रहे होते हैं और प्रतिक्रमण भी होता जाता है लेकिन आप जिस तरह से करते हैं और हम करते हैं उसमें हमें फर्क लगता है।

दादाश्री : हमारा तो कैसे अलग है? सफेद बाल और बिल्कुल मुलायम, काले बाल उनमें कितना अंतर है?

प्रश्नकर्ता : आप कहिए कि आप प्रतिक्रमण किस तरीके से करते हैं?

दादाश्री : उसका तरीका कहने से नहीं मिल सकता। ज्ञान होने के बाद, बुद्धि के चले जाने के बाद, उस स्थिति के आने तक वह तरीका खोजना भी नहीं। हमें अपने आप आगे बढ़ना है। जितना बढ़ पाएँ उतना सही।

प्रश्नकर्ता : हमें खोजना नहीं है, जानना ही है, दादा।

दादाश्री : नहीं। लेकिन वह तरीका मिल हीं नहीं सकता। साफ हो गया हो, 'क्लियर' ही हो, वहाँ करने को रहा ही क्या? एक तरफ भूल होती जाती है और एक तरफ धुलती जाती है। जहाँ अन्य कोई दखल ही नहीं है। सब 'अन्क्लियर', सब मिट्टी के ढेर पड़े हों व ईंटें पड़ी हों तो वह चलेगा ही नहीं न! फिर भी रास्ते पर धूल दिखाई देने लगे तो हमें समझ जाना है कि अब पहुँचने वाले हैं। यदि आपको खुद की भूल दिखाई देती है, तो फिर क्या हर्ज है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, यह तो आपका तरीका जानने के लिए पूछा था।

दादाश्री : जब खुद की भूल दिखाई देने लगे, तब जानना कि सही मार्ग पर आ गया है।

भादरण वाले आते हैं, तब मैं कहता हूँ कि 'तेरे चाचा तो ऐसे थे।'

प्रश्नकर्ता : आपकी बात अलग है।

दादाश्री : नहीं, हमारा चाहे कितना भी अलग हो फिर भी हमें उसके प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। एक अक्षर भी नहीं छोड़ सकते। क्योंकि वह भगवान कहा जाता है। आप क्या कहते हो? निंदा करना बंद कर देना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : यदि जागृति हो तो निंदा नहीं करेगा।

दादाश्री : जागृति रहती है, खुद जग रहा होता है और एक तरफ ऐसा बोला जा रहा होता है। खुद को ऐसा लग रहा होता है कि यह गलत कह रहा हूँ, ऐसा भी जानता है।

प्रश्नकर्ता : वह तो ज्ञानीपुरुष की बात हुई।

दादाश्री : नहीं, आप को भी वैसा रहता है न?

प्रश्नकर्ता : ऐसा होता है कि जागृति होती है, फिर भी निंदा या वह जो कुछ कर रहे हों, वे दोनों एक साथ होते रहते हैं और उस वक्त उसका प्रतिक्रमण हो जाता है।

ज्ञानी के प्रतिक्रमण कैसे?

हम तो कितने ही जन्मों से प्रतिक्रमण करते-करते आए हैं, तब जाकर अभी कपड़े साफ हुए हैं और आपके भी कपड़े साफ कर देते हैं!

मुझे भी प्रतिक्रमण करने होते हैं। मेरे अलग प्रकार के और आपके भी अलग प्रकार के होते हैं। मेरी भूल आपको बुद्धि से पता नहीं चल सके, ऐसी होती है। हम में स्थूल दोष या सूक्ष्म दोष नहीं होते हैं। ज्ञानी के दोष सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम होते हैं। जो अन्य किसी को किंचित्मात्र भी अड़चनरूप नहीं होते। हमारे सूक्ष्म से सूक्ष्म, अति सूक्ष्म दोष भी हमारी दृष्टि से बाहर नहीं जा सकते। किसी और को पता नहीं चलता कि हम से दोष हुआ है। हमें तो उपयोग चूक जाने पर भी प्रतिक्रमण करना पड़ता है। उपयोग चूकना हमें तो पुसाएगा ही नहीं न?

जब तक हममें साहजिकता होती है, तब तक हमें प्रतिक्रमण की आवश्यकता नहीं होती। साहजिकता में आपको भी प्रतिक्रमण नहीं करने पड़ते। साहजिकता में फर्क पड़ा कि प्रतिक्रमण करना पड़ेगा। हमें आप जब देखोगे तब साहजिकता में ही देखोगे। जब देखो तब हम वैसे ही स्वभाव में दिखते हैं। हमारी साहजिकता में बदलाव नहीं आता!

हमारी भूलें, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम

मेरे कुछ ऐसे (स्थूल) दोष नहीं आने वाले, यह तो कचरा सब। मेरा जो दोष दिखाई देता है न! उसे यदि जगत् सुनेगा तो आफरीन हो जाएगा, और कहेगा कि इसे दोष कैसे माना जाए? इसलिए तो वे भगवान कैसे? कैसा कैवल्य है! कितना ऐश्वर्य रखते हैं!! फुल ऐश्वर्य!!! सारे वर्ल्ड में। इसलिए कहते हैं न, पास में बैठे रहना, समझ में न आए तो भी!

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने जिन्हें दोष कहा न, एक-दो उदाहरण दीजिए न, जहाँ आश्चर्य हो जाए, उसके एक-दो उदाहरण दीजिए न?

दादाश्री : वह तो जब सही वक्त आएगा तब सामने ही उदाहरण दूँगा तब मज़ा आएगा।

हमें वह दोष दिखे बगैर रहते ही नहीं। आप उसे बाहर देखने जाओ तो क्या कहेंगे कि इसे दोष कैसे कहेंगे? इसे दोष मानेंगे ही कैसे? खाना खाते वक्त दोष दिखता है न कि यह दोष किया, यह दोष किया। दोष यानी *पुद्गल* के मूल मालिक भी तो हम ही हैं। ज़िम्मेदार तो हम ही हैं न! पहले टाइटल तो अपना ही था न, अभी टाइटल लौटा दिया है लेकिन वे वकील छोड़ेंगे क्या? कानून ढूँढ निकालेंगे न?

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं 'मालिकीपना छूट गया है' तो फिर ये दोष अपने कैसे कहलाएँगे? *पुद्गल* के दोषों से हमें क्या लेना-देना?

दादाश्री : अपने नहीं कहलाएँगे लेकिन ज़िम्मेदार तो हो ही।

प्रश्नकर्ता : यह बात तो आपके लिए है।

दादाश्री : हमें जो दोष दिखाई देते हैं, वे हमें समझ में आते हैं न! ओहोहो! भगवान में कितनी शक्ति उत्पन्न हो गई है, कि अभी भी उन्हें हम में दोष दिखाई देते हैं! और फिर, वे हमें सही लगते हैं। 'हम' कहाँ हैं, 'वे' कहाँ हैं, वह मुझे समझ में आता है। और तो क्या परेशानी है? ऐसा कोई संसारी दोष हुए हों, ऐसा नहीं है।

प्रश्नकर्ता : वे दोष बहुत सूक्ष्म होते हैं?

दादाश्री : सूक्ष्मातिसूक्ष्म। जिसे सूक्ष्मतम कहा जाता है, वे।

हम आपको दोष दिखाते हैं क्योंकि आपको आपके दोष दिखाई नहीं देते इसलिए, वे भविष्य में भी आपके *ऊपरी* रहेंगे। दोष दिखाने वाले चाहिए न? इसलिए मुझे *ऊपरी* बनना पड़ा है न! नहीं तो मुझे आपका *ऊपरी* नहीं बनना पड़ता। मैं तो ज्ञान देकर अलग हो जाता इसलिए हमेशा *ऊपरी* रहना पड़ता है, बताने वाला चाहिए। आप खुद के दोष देख पाते तो *ऊपरी* होता ही नहीं। यह कुदरत का नियम है नैचुरल लॉ। आपको खुद के दोष दिखाई नहीं देते इसलिए *ऊपरी* रहेंगे ही। ये थोड़े बहुत दोष दिखाई देते हैं न, वह भी इसलिए क्योंकि मैंने दृष्टि दी है। अब और ज़्यादा दिखते जाते हैं या नहीं?

प्रश्नकर्ता : दिखते हैं न!

दादाश्री : अभी भी सूक्ष्म में तो पहुँचे ही नहीं हो। अभी यह सब तो स्थूल में है।

अभेदता के सिद्धांत द्वारा प्रतिक्रमण

अपने सिद्धांत में कोई दोषित है ही नहीं न!

इस जन्म जयंती के अवसर पर पच्चीस सौ लोग आए थे। उनमें से क्या किसी की भी दृष्टि मेरे प्रति खराब हुई होगी?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : किस वजह से? अंदर साफ कर लिया है न! पूरी रात मैं साफ करता रहा और सुबह जल्दी उठकर खुला छोड़ दिया, उसके बाद फिर मैला होगा ही नहीं न! इधर करवट ली उधर करवट ली और लगातार साफ ही करते रहे।

प्रश्नकर्ता : किस तरह किया दादा? उसमें क्या किया?

दादाश्री : कितने ही प्रतिक्रमण किए। कितने सारे लोग, उनसे मिलना, बातचीत करना। उन सभी लोगों से मैं रात को मिलने जाता हूँ। बातचीत करता हूँ, मैं उनके मन का समाधान कर देता हूँ, वहीं के वहीं। फिर जब वे यहाँ पर आते हैं तो उन्हें समाधान ही महसूस होता है।

प्रश्नकर्ता : किसी व्यक्ति के साथ आप मन कैसे साफ करते हैं? क्या बात-चीत करते हैं?

दादाश्री : ऐसे कि 'भाई, मेरी भूल हो गई है और अब हमें मोक्ष में जाना है न, इस झंझट में क्यों पड़ते हो? हमें क्या लेना-देना है?' इस तरह उसका मन खुश कर देते हैं।

प्रश्नकर्ता : कल आपने पूरी रात प्रतिक्रमण किए, उसके पीछे कौन सा प्रिन्सिपल (सिद्धांत) काम करता है?

दादाश्री : अभेदता का। इन पच्चीस सौ लोगों के साथ अभेदभाव था। पच्चीस सौ नहीं, पूरे शहर के साथ अभेद था। इसके बावजूद भी कोई आँख निकाल गया, कोई दर्शन भी कर जाता है। तूने देखा सभी जगह प्रेम! निरावरण आत्मा, चला बैठे-बैठे! निरावरण आत्मा, देह रहित आत्मा चला, बाज़ार के बीच! और देखो आनंद, आनंद, आनंद में थे लोग! हम ने पूरे जगत् के साथ इस तरह निवारण किया है, तभी तो यह छुटकारा हुआ।

गौतम स्वामी का प्रतिक्रमण

भगवान के समय में क्या ऐसे प्रतिक्रमण होते थे? भगवान के समय की तो बात ही क्या! भगवान के श्रावक, आनंद श्रावक को अवधिज्ञान प्रकट हुआ था। गौतम स्वामी वहाँ पहुँचे, तब आनंद श्रावक ने उनसे कहा कि, 'मुझे अवधिज्ञान प्रकट हुआ है!' तब गौतम स्वामी को वह सच नहीं लगा। उन्होंने आनंद श्रावक से कहा कि, 'यह झूठा विधान है, इसीलिए आप उसका प्रतिक्रमण करो।' आनंद श्रावक ने कहा, 'सच्चे का करूँ या झूठे का?' गौतम स्वामी ने कहा, 'प्रतिक्रमण झूठे का ही करना होता है, सच्चे का नहीं।' तब आनंद श्रावक ने कहा, 'यदि सच्चे का प्रतिक्रमण नहीं होता तो मैं प्रतिक्रमण करने का अधिकारी नहीं हूँ।' तब गौतम स्वामी चले गए, जाकर भगवान महावीर स्वामी से पूछने लगे, 'हे भगवन! आनंद श्रावक प्रतिक्रमण के अधिकारी हैं या नहीं?' भगवान ने कहा, 'गौतम! आनंद सच्चा है, उसे अवधिज्ञान प्रकट हुआ है, इसलिए आप जाओ और आनंद श्रावक के प्रतिक्रमण कर आओ।' तब गौतम स्वामी दौड़ते हुए आनंद श्रावक के पास पहुँच गए और प्रतिक्रमण किया!

व्यवहार शोभा नहीं दे ऐसा हो, तो वहाँ पर प्रतिक्रमण करना पड़ता है।

तीर्थंकरों के प्रतिक्रमण का कोड

इसलिए महावीर भगवान ने आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान, ये तीनों चीज़ें एक ही शब्द में दी हैं। और कोई रास्ता है ही नहीं। अब खुद प्रतिक्रमण कब कर सकता है? खुद

को जागृति हो तब, 'ज्ञानीपुरुष' के पास से ज्ञान प्राप्त हो, तब वह जागृति उत्पन्न होती है। आपको तो प्रतिक्रमण कर लेना है, ताकि आप ज़िम्मेदारी में से छूट जाओ।

प्रश्नकर्ता : वाणी बोलते समय किस प्रकार की जागृति रखनी चाहिए?

दादाश्री : तीर्थंकरों ने ऐसा कोड निश्चित किया होता है कि 'मेरी वाणी से किसी भी जीव को किंचित्मात्र भी दुःख नहीं हो। दुःख तो हो ही नहीं, लेकिन किसी जीव का किंचित्मात्र प्रमाण भी नहीं दुभे (आहत हो), पेड़ का भी प्रमाण नहीं दुभे।' ऐसे कोड सिर्फ तीर्थंकरों के ही हुए होते हैं। (हमें) जागृति ऐसी रखनी है कि 'ये बोल बोलने में किस-किसका किस प्रकार से प्रमाण दुभ रहा है', उसे देखना है।

प्रश्नकर्ता : वाणी निकलते समय कैसी और किस प्रकार की जागृति रखनी चाहिए?

दादाश्री : सामने वाले का दिल बैठ जाए, ऐसा बड़ा पत्थर मारें तो उस समय अपनी जागृति उड़ ही जाएगी! छोटा पत्थर मारें तो जागृति नहीं जाएगी। यानी पत्थर छोटा हो जाएगा, तब वह जागृति आएगी।

प्रश्नकर्ता : तो हम पत्थर किस तरह छोटा करें?

दादाश्री : प्रतिक्रमण से!

स्वरूप का ज्ञान और प्रतिक्रमण से ही मोक्ष

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादाजी, ऐसा है कि यही एक शस्त्र है जिससे मोक्ष होगा।

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं है। प्रतिक्रमण तो इन सब साधनों में से एक साधन है। मोक्ष में जाने के लिए तो अपने स्वरूप का ज्ञान बस इतना ही साधन है, दूसरा कोई साधन नहीं है।

प्रश्नकर्ता : वह तो ठीक है लेकिन प्रतिक्रमण प्रत्याख्यान करते रहना पड़ेगा न?

दादाश्री : करने पड़ेंगे। वे भी जिससे हो पाए वे करते हैं। जिनसे नहीं हो पाए वे क्या करेंगे? जब वे नहीं चल पाते तब मुझे कंधे पर बैठाना पड़ता है। वे तो अपने आप करेंगे बाद में उनमें शक्ति आएगी तो करेंगे। करें ही नहीं ऐसे ढीठ नहीं हैं ये। दादा को जो मिले वे सभी ढीठ हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा, हमें यह विस्तार से समझाइए।

दादाश्री : अगर आपको समझाना हो तो मैं कहूँगा कि आलोचना-प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान तीनों ही करना। आप सब को चैन आ गया है। इन्हें चैन नहीं मिला है। कलियुग में इंसान को चैन कैसे मिल सकता है?

प्रतिक्रमण करने वाला प्रतिष्ठित आत्मा

अगर हमें पूर्णाहूति करनी हो तो दो भाग रखने चाहिए। एक फाइल वाला भाग प्रतिष्ठित आत्मा और दूसरा मूल भाग, शुद्धात्मा। फाइलों में जो भूल वाला भाग है उसके कारण विचार आते हैं उनके ज्ञाता-दृष्टा रहने से यथार्थ रूप से दोनों भागों में रह सकते हैं। और यदि वैसे नहीं रह पाते तो फाइल से कहना कि जो भूलें हो गई हैं उनका प्रतिक्रमण करो। मूल भाग को तो प्रतिक्रमण करने का रहता ही नहीं।

'हमें क्रोध नहीं करना चाहिए।' ऐसा कहने वाला भी प्रतिष्ठित आत्मा है। हम देखने वाले और जानने वाले। क्रोध हुआ उसे जाना अर्थात् हम

ज्ञाता-दृष्टा। प्रतिष्ठित आत्मा से प्रतिक्रमण करवाना, अलग रहकर एकाकार होकर नहीं।

प्रतिक्रमण के पंप द्वारा प्रगति

पाँच आज्ञा में ज़्यादा रहना है। दूसरा कुछ करने जैसा है नहीं। सुबह से निश्चित करना है कि पाँच आज्ञा में ही रहना है और नहीं रह पाओ तो रात को प्रतिक्रमण कर लेना ताकि दूसरे दिन रहा जा सके। बाद में आगे फोर्स बढ़ता जाएगा। उसके लिए कोई दूसरे पंप नहीं होते हैं, यही पंप।

प्रश्नकर्ता : हाँ, प्रतिक्रमण का पंप।

दादाश्री : प्रतिक्रमण का पंप इसलिए मैंने क्या नियम बनाया था कि भाई, जितनी आज्ञाओं का आप से पालन हो सके उतना करना और अगर आप नहीं कर पाते तो दादा से क्षमा माँग लो कि 'दादाजी, जितना पालन कर सकता हूँ उतना करता हूँ और जितना पालन नहीं कर पाता उसके लिए मैं क्या कर सकता हूँ? इसलिए आप से क्षमा माँगता हूँ।' तो आपकी सारी आज्ञाएँ पूरी हो गई लेकिन यह सोच-विचार कर धकेलने के इरादे से नहीं करना।

प्रश्नकर्ता : हाँ, ठीक है।

दादाश्री : हार्टिली रूप से, आप से नहीं हो पाए तो आप इस तरह से करो तो फिर मैं ऐसा स्वीकार लूँगा कि हमारी सभी आज्ञाओं का पालन किया।

क्योंकि इंसान कितना कर सकता है? जितना हो सके उतना करता है और बाकी के लिए माफी माँग लो, बाद में उसका तो मैं सब भगवान से कह दूँगा न कि क्या हर्ज है इसमें? आपकी आज्ञा में ही हैं। पालन नहीं कर सके तो ये क्या कर सकते हैं?

अर्थात् अपने तो सभी नियम बहुत सुंदर हैं! प्रतिक्रमण कर लेना पड़ेगा और वह प्रतिक्रमण आपको आगे ले जाएगा, टॉप पर, उसके द्वारा आगे बढ़ सकते हैं। अपने पास रास्ते हैं, उनमें रहने की ज़रूरत है। टेन्शन रखने की कोई ज़रूरत नहीं है। इससे कुछ हानि नहीं होगी। रास्ते को पकड़ने की ज़रूरत है, ज्ञान को पकड़ने की ही ज़रूरत है।

मुझे दादा की आज्ञा का पालन करना है और इनके साथ 'समभाव से *निकाल*' करना ही है फिर समभाव से *निकाल* नहीं हो पाए तो आप ज़िम्मेदार नहीं हो। आज्ञा पालन करने के अधिकारी हो, आप अपने निश्चय के अधिकारी हो, आप उसके परिणाम के अधिकारी नहीं हो। आपका निश्चय होना चाहिए कि मुझे आज्ञा पालन करना ही है फिर यदि पालन नहीं हो सके तो आपको उसके लिए खेद नहीं रखना है लेकिन जिस प्रकार से मैं आपको बताता हूँ उस अनुसार प्रतिक्रमण करना। अतिक्रमण किया है इसलिए प्रतिक्रमण करो। इतना सरल, सीधा व सुगम मार्ग है, इसे समझ लेना है।

हमें शुद्ध करो, आप तो शुद्ध हो गए

अतिक्रमण, वह सब से बड़ी हिंसा है, उसके लिए प्रतिक्रमण होना चाहिए। बाहर की स्थूल हिंसा, वह तो स्पर्श करे या न भी करे, वह तो भीतर की मशीनरी कैसे घूमती है उसके अनुसार कर्मबंधन होता है लेकिन भीतर की हिंसा, सूक्ष्म हिंसा तो धोनी ही पड़ती है। अतिक्रमण, वह तो हिंसाखोरी कहलाती है, अभी तो लोग हिंसा को भी नहीं समझते तो प्रतिक्रमण क्या करेंगे? कैसा करेंगे? यदि स्थूल हिंसा, हिंसा कहलाती तो भरत

राजा मोक्ष में ही नहीं जा सके होते! उनके हाथों तो कितनी ही सैनाएँ मारी गई! स्थूल हिंसा बाधक नहीं है, सूक्ष्म हिंसा बाधक है!

इन महात्माओं को हम ने कुछ और ही प्रकार की चीज़ हाथ में दी है! आश्चर्यजनक है! दुनिया के लोगों को एक्सेप्ट करना पड़ेगा कि ये लड़ रहे होते हैं फिर भी इनके अंदर का समकित चला नहीं जाता, दोनों क्षेत्रों की धारा अलग ही बहती रहती हैं। आपकी तो दोनों ही धाराएँ एक साथ बहती रहती हैं। आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान के बिना दोनों धाराएँ अलग रहती ही नहीं।

जहाँ निरंतर प्रतिक्रमण होते हैं, वहाँ आत्मा 'शुद्ध' ही होता है। हम लोग तो दूसरों में शुद्धात्मा देखें, प्रतिक्रमण करें और खुद के शुद्धात्मा तो लक्ष्य में रहते ही हैं। यह व्यवहारिक क्रिया नहीं कहलाती, उससे फिर बाकी का सभी शुद्ध होता रहता है। यह *पुद्गल* क्या कहता है? 'आप तो शुद्धात्मा हो गए लेकिन मेरा मोक्ष नहीं होगा।' 'क्यो ं भाई, इसमें क्या रुकावट है? मैं शुद्ध हो चुका हूँ। मेरा स्वरूप जान लिया।' तब *पुद्गल* कहता है, 'आप मोक्ष में नहीं जा सकते। जब तक हम आपको नहीं छोड़ेंगे तब तक तो आप कैसे जा पाओगे?' तब कहते हैं, 'भाई, आपको क्या हर्ज है?' तब *पुद्गल* कहता है, ''हम तो हमारे स्वभाव में थे। आपने ही हमें बिगाड़ा है। आप 'साफ' हो गए, अब हमें साफ करके जाओ। हमें 'शुद्ध' करो, 'आप' तो 'शुद्ध' हो गए! तो आप हमें ऐसा बना दो जैसे हम थे तो हम मुक्त''। अतः शुद्ध देखना है। जगत् अशुद्ध देखता है क्योंकि 'मैं कर्ता हूँ' उस भाव से करता है। और 'इसका कर्ता मैं नहीं हूँ' अब वह भाव हुआ है, उससे मुक्त हो गए। जब यह अशुद्ध हो चुका *पुद्गल* निकले, तब यदि प्रतिक्रमण करे तो उससे वह शुद्ध हो जाएगा।

अक्रम सिद्धांत से होगी पूर्णाहुति

'राइट बिलीफ' से ही अविरोधाभास उत्पन्न होता है और अविरोधाभास को 'सिद्धांत' कहा जाता है। 'विज्ञान' हमेशा सैद्धांतिक होता है और वह सर्व दुःखों का 'एन्ड' (अंत) लाता है। 'विज्ञान' ही उसका उपाय है लेकिन वह 'ज्ञानीपुरुष' का अनुभवजन्य 'विज्ञान' होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : इस अक्रम की विशेषता यह है कि, आत्मा और अनात्मा, दोनों भेद-विज्ञानी के माध्यम से अलग हो चुके हैं, जबकि क्रमिक में तो अंत तक उसका (जीवित अहंकार का) सातत्य रहता ही है।

दादाश्री : अंत तक अहंकार भी रहता है, कम होता जाता है।

प्रश्नकर्ता : उसमें कम होता जाता है और यहाँ तो यह जो अलग हो चुका है, उसके कारण जो दशा बरतती है, वह अक्रम की विशेषता है।

दादाश्री : इसीलिए यहाँ प्रतिक्रमण करना पड़ता है क्योंकि अकाल दशा में ज्ञान प्राप्त हो गया है, इसलिए।

यह तो आसान मार्ग है, चाबियों से तुरंत ही ताले खुल जाते हैं! ऐसा संयोग अन्य किसी काल में नहीं मिलेगा! यह तो अक्रम मार्ग है! एक्सेप्शनल केस (अपवाद मार्ग) है! ग्यारहवाँ आश्चर्य है! यहाँ काम निकाल लेना। ऐसे प्रतिक्रमण से लाइफ भी सुंदर गुजरती है और मोक्ष में जाते हैं!

- जय सच्चिदानंद

दोष निकालने का कॉलेज

हँसते-खेलते दोष निकालने का कॉलेज ही यह है! नहीं तो दोष तो बिना राग-द्वेष के जाते नहीं। हँसते-खेलते चलता है यह कॉलेज, वह भी एक आश्चर्य ही है न! अक्रम का आश्चर्य है न!

प्रश्नकर्ता : आपके शब्द ऐसे निकलते हैं कि दोष निकलता जाता है वहाँ से। यहाँ से शब्द ऐसे निकलते हैं कि दोष वहाँ झड़ जाता है।

दादाश्री : झड़ जाता है न? ठीक है।

अब आपको दोष दिखता है यह आपको कैसे पता चले? तब कहें, चंदूभाई गुस्सा करे, वह आपको पसंद नहीं आता। वह समझ में आया कि इस चंदूभाई में यह दोष था। पकड़ा गया दोष। वे दोष आपने देखे। चंदूभाई में जो दोष थे वे आपने देखे। 'देखा नहीं निजदोष तो तरिये कौन उपाय?' निजदोष देखने की दृष्टि उत्पन्न हो गई यानी परमात्मा होनी की तैयारी हुई, कहते हैं। और निजदोष तो किसीको भी नहीं दिखते। अहंकार है तब तक एक-एक अणु में दोष है। भ्रांति जाए तब पता चलता है कि ओहोहो! चंदूभाई क्रोध करते हैं। वह हमें पसंद नहीं आता। चंदूभाई ऐसा करते हैं, वह चंदूभाई का दोष पकड़ में आया। पकड़ में आते हैं या नहीं पकड़ में आते दोष सारे?

प्रश्नकर्ता : पकड़ में आते हैं। पर दादा, आपका वाक्य अच्छा लगा था। दोष दिखा और गया। दिख गया इसलिए गया।

दादाश्री : दोष दिखा इसलिए गया। इसीलिए तो शास्त्रकारों ने कहा, महावीर भगवान ने कहा था कि तू दोष को देख ले। दोष में एकाग्रता होने से, उतना देखा नहीं और अँधा बना रहा, इसलिए दोष तुझसे चिपटा। अब उस दोष को तू देखेगा तो चला जाएगा। अब वह दावा क्या करता है? वह पुद्गल हमसे कहता है कि आप तो शुद्धात्मा हो गए, मेरा क्या? तब हम कहें, 'अब मेरा और तेरा क्या लेना-देना?' तब कहे, 'नहीं, ऐसा नहीं चलेगा। आपने मुझे बिगाड़ा था। यह जैसा था, वैसा कर दो। नहीं तो आपका छुटकारा नहीं होगा।' तब कहें, 'किस तरह छुटकारा हो?' तब कहें 'जिस अज्ञानता से आपने देखा, उससे हम बंधे आपके साथ और ज्ञान से देखो, तो हम छूट जाएँगे।' इसलिए ज्ञान के द्वारा दोष देखे बिना वह दोष जाएगा नहीं। अज्ञान से बाँधे गए, ज्ञान के द्वारा छूटते हैं। इसलिए हमने देखे। ज्ञान यानी देखना, देखा वह छूट गया। फिर चाहे कैसा भी हो। और फिर भी अक्रम विज्ञान है... क्रमिक में सारा मार्ग समझदारीवाला होता है। छोड़ते-छोड़ते आया होता है और यहाँ तो छोड़ते-छोड़ते नहीं आया है। इसलिए किसीको दुःख हो, ऐसा बोल गए हों चंदूभाई, तो चंदूभाई से कहना कि, 'प्रतिक्रमण करो, क्यों ऐसा करते हो?'

प्रश्नकर्ता : शूट एट साईट, तुरन्त ही?

दादाश्री : हाँ, पूरा दिन नहीं, पर वह तो लगता है हमें कि, 'यह दोष, यह सामनेवाले को दुःख हो ऐसा बोला है' उसका प्रतिक्रमण करना और वह करते हैं हमारे महात्मा। शुद्धात्मा को प्रतिक्रमण क्या करना? जो अतिक्रमण करता ही नहीं है, उसे प्रतिक्रमण क्या करना? यह तो जिसने किया उसे कहना कि आप करो। पूरा सिद्धांत याद रखना पड़ेगा यह तो। और रहता भी है, लिखे तो भूल जाए। पूरा सिद्धांत याद रहता है न? हाँ... उनसे उम्र के कारण थोड़ा कम आया जाता है फिर भी सब याद, लक्ष्य में रहनेवाला है सभी। हमें तो काम से काम है न? छूटने से काम है न हमें?

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

15-19 जून : ब्राज़िल देश की राजधानी ब्राज़िलिया से पूज्यश्री के विदेश प्रवास की शुरुआत हुई। ब्राज़िल के एक मुमुक्षु ने ओडिसी नृत्य करके पूज्यश्री का स्वागत किया। ब्राज़िल के एक डॉक्टर ने और अमरीका से आए हुए मुमुक्षु कपल ने अपने अनुभव का वर्णन किया था। 285 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया, जिसमें ब्राज़िल के विविध शहरों से और आसपास के देशों से लोग आए थे। लगभग 100 पुराने स्थानीय महात्मा भी आए थे। इस विज्ञान और इवेन्ट के बारे में लोगों को पूर्व जानकारी प्राप्त हो इसलिए अलग-अलग स्थलों पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए थे। ज्ञानविधि के बाद सभी महात्मा गरबा में बहुत नाचे। महात्मा इन्फॉर्मल समय में तीन अलग-अलग क्रूज़ (बोट) में पूज्यश्री के साथ गए। साथ में रहने का लाभ सभी को मिले इसलिए पूज्यश्री तीनों बोट में गए। अंतिम दो दिन महात्माओं के लिए पारायण रखी गई थी।

23-25 जून : टेक्सास के महात्माओं के लिए मोन्टगोमेरी के ला टोरेटा लेक रिसोर्ट में तीन दिनों की शिविर आयोजित हुई। इस बार ह्युस्टन में सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम के बजाय महात्माओं को लाभ मिले, इस हेतु से इस शिविर का आयोजन किया गया। महात्माओं को पूज्यश्री के सत्संग, दर्शन, मोर्निंग वॉक, गरबा-भक्ति का विशेष लाभ प्राप्त हुआ। लगभग 250 महात्माओं ने शिविर में हिस्सा लिया था।

27-29 जून : अमरीका के विर्जिनिया स्टेट के रीचमंड शहर में पूज्यश्री पहली बार पधारे थे। मुमुक्षुओं को आत्मज्ञान प्राप्त हो सके इसलिए छः महीनों से स्थानीय महात्माओं ने रात-दिन बहुत मेहनत की। ज्ञानविधि में 225 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। लगभग 500 महात्मा-मुमुक्षु उपस्थित रहें। मेमोन्ट पार्क के इटालियन गार्डन में दादा दरबार आयोजित किया गया, उस दौरान पूज्यश्री सभी से वन टू वन मिलें, दर्शन, सत्संग का अनन्य लाभ प्राप्त करके स्थानीय महात्माओं ने तृप्ति का अनुभव किया। फॉलोअप सत्संग में लगभग 100 महात्माओं ने आप्तपुत्र से पाँच आज्ञा की समझ प्राप्त की। इस इवेन्ट से पहले सिल्वर स्प्रिंग में मुमुक्षुओं के लिए आप्तपुत्र सत्संग रखा गया था।

5-10 जुलाई : अमरीका के फिलाडेलफिया शहर में गुरुपूर्णिमा महोत्सव आयोजित किया गया जिसमें 3200 मुमुक्षु-महात्माओं ने हिस्सा लिया। प्रथम दिन 'गुरु-शिष्य' पुस्तक का वाचन किया, फिर महात्माओं ने गुरु से संबंधित प्रश्न भी पूछे। दूसरे दिन 'स्पर्धा गिराए संसार में' और 'अद्‌भुत व अलौकिक व्यवहार ज्ञानी का' टॉपिक पर पूज्यश्री ने सुंदर सत्संग किया। शाम को ज्ञानविधि में 375 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। 8वीं जुलाई, पूज्य नीरू माँ के ज्ञानदिन पर पूज्यश्री ने श्री सीमंधर स्वामी की 250 प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा विधि की। विधि के बाद महात्माओं ने मूर्ति का प्रक्षाल-पूजन और आरती की। फिर महात्माओं ने सिर पर मूर्ति रखकर गरबा किया। नए ज्ञान लिए हुए महात्माओं के लिए शाम को पूज्यश्री द्वारा फॉलोअप सत्संग हुआ। गुरुपूर्णिमा के दिन त्रिमंत्र-नमस्कार विधि के बाद पूज्यश्री ने जगत् कल्याण की भावना करवाई। इस साल का गुरुपूर्णिमा संदेश देते हुए पूज्यश्री ने कहा कि 'पसंद-नापसंद संयोगों में समता रखनी चाहिए'। फिर दादाश्री का पूजन और आरती की गई।

अगले साल साउथ इस्ट एरिया के महात्माओं द्वारा जेक्सनवील शहर में गुरुपूर्णिमा आयोजित करने की पूज्यश्री ने घोषणा की। वहाँ उपस्थित सभी महात्मा बारी-बारी से पूज्यश्री के दर्शन करके धन्य हो गए। इस बार गुरुपूर्णिमा का हॉल हर बार से बड़ा था। इस महोत्सव के दौरान **JJ - 111** के बारे में प्रेज़न्टेशन किया गया और उसका थीम सोंग रिलीज़ किया गया। 360 डिग्री पेरेन्टिंग के प्रदर्शन शो आयोजित किए और दादा भगवान के जीवन और ज्ञान पर विशेष प्रदर्शन भी आयोजित किए। अंतिम दिन महात्माओं और सेवार्थियों ने अपने सेवा के एवं ज्ञान से संबंधित अनुभवों का वर्णन किया।

स्पेशियल टेलिकास्ट देखिए अरिहंत चेनल पर

पारायण (विशेष सत्संग) आप्तवाणी - 13 (उ.) पर गुजराती भाषा में

18 से 25 अगस्त हररोज सुबह 10-30 से 1 तथा शाम 4-30 से 7

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत	✦ **'साधना' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
	✦ **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
	✦ **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
	✦ **'अरिहंत'** पर हर रोज़ शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)
USA-Canada	✦ **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)
	✦ **'SAB-US'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST
UK	✦ **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
	✦ **'SAB-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 - Western European Time (6.30am-7am GMT)
Singapore	✦ **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (हिन्दी में)
Australia	✦ **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 11-30 से 12 (हिन्दी में)
New Zealand	✦ **'SAB- International'** पर हर रोज़ दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत	✦ **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
	✦ **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
	✦ **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा शाम 6-30 से 7, शुक्र शाम 4 से 4-30 (हिन्दी में)
	✦ **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर हर रोज़ दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
	✦ **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
	✦ **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8 से 9 (गुजराती में)
	✦ **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
UK	✦ **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)
Singapore	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
Australia	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)
New Zealand	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)
USA-UK-Africa-Aus.	✦ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात 10 से 10-30

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेइल आइडी पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345#. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

कोलकाता **दिनांक :** 2 **सितम्बर** **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9830080820
स्थल : 12/1/2B, सनफ्लावर अपार्टमेंट्स, राज रेस्टोरन्ट के निकट, मनोहर पुकुर रोड, कोलकत्ता.

टाटानगर **दिनांक :** 4 **सितम्बर** **समय :** शाम 4-30 से 6-30 **संपर्क :** 7209772783
स्थल : लेन नंबर -13, होल्डिंग नंबर - 386, कसिदिः, साक्ची, जमशेदपुर, (टाटानगर).

राउरकेला **दिनांक :** 5 **सितम्बर** **समय :** शाम 6-30 से 9 **संपर्क :** 7749975047
स्थल : श्री गुर्जर जैन संघ, C/o न्यू लाइट हाउस, मेइन रोड, राउरकेला.

संबलपुर **दिनांक :** 6 **सितम्बर** **समय :** शाम 5 से 8 **संपर्क :** 9668159987
स्थल : जलाराम मंदिर, गुजराती कॉलोनी, जी. एम. कॉलेज रोड, संबलपुर.

देहरादून **दिनांक :** 10 **सितम्बर** **समय :** दोपहर 12 से 3 **संपर्क :** 9012279556
स्थल : जैन धर्मशाला, प्रिंस चौक और रेल्वे स्टेशन के बिच में, देहरादून.

वाराणसी **दिनांक :** 1-2 **अक्तूबर** **समय :** सुबह 10 से 6 **संपर्क :** 7985387292
स्थल : उत्सव वाटिका, लुक्सा रोड, गुरुद्वारा के पास, इलाहाबाद बैंक के सामने, गुरुबाग, वाराणसी.

लखनऊ **दिनांक :** 6 **अक्तूबर** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9839265016
स्थल : फौजी ढाबा के निकट, सीतापुर रोड, बख्शी का तालाब, नंदना, लखनऊ.

लखनऊ **दिनांक :** 7 **अक्तूबर** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 8090177881
स्थल : मधुर संगीत विद्यालय, 563/74 चित्र गुप्त नगर, आलमबाग, लखनऊ.

आगरा **दिनांक :** 10 **अक्तूबर** **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 9258744087
स्थल : यूथ होस्टल, मरीना होटल के सामने, हरिपर्वत क्रासिंग के पास, आगरा.

गोवा **दिनांक :** 29 **सितम्बर** **समय :** दोपहर 3-30 से 6-30 **संपर्क :** 8698745655
स्थल : होटल यशोदा, सारस्वत बेंक के उपर, पोंडा, गोवा.

हुबली **दिनांक :** 4 **अक्तूबर** **समय :** शाम 4 से 6-30 **संपर्क :** 9513216111
स्थल : श्री लक्ष्मीनारायण पाटीदार भवन, न्यू टिम्बर यार्ड, उन्कल, हुबली.

उत्तर भारत

लक्सर	दि : 7 सितम्बर	संपर्क : 9719415074
रूड़की	दि : 8-9 सितम्बर	संपर्क : 8171025467
गोरखपुर	दि : 3-5 अक्तूबर	संपर्क : 7800656738
कानपुर	दि : 8-9 अक्तूबर	संपर्क : 9452525981

पूर्व भारत

कोलकाता (बीरलारपुर)	दि : 3 सितम्बर	संपर्क : 9830080820
डोंगरपाली	दि : 7 सितम्बर	संपर्क : 8658090042
बरगढ़	दि : 8 सितम्बर	संपर्क : 8658090042
चंपारण (रायपुर)	दि : 9-10 सितम्बर	संपर्क : 9827481336
भुवनेश्वर	दि : 1-2 अक्तूबर	संपर्क : 8763073111
कटक	दि : 3 अक्तूबर	संपर्क : 8763073111
ब्रह्मपुर	दि : 4 अक्तूबर	संपर्क : 8763073111
भुवनेश्वर	दि : 5-7 अक्तूबर	संपर्क : 8763073111

दक्षिण भारत

गोवा	दि : 30 सितम्बर	संपर्क : 8698745655
बेलगाम	दि : 1-2 अक्तूबर	संपर्क : 9448527191
धारवाड	दि : 3 अक्तूबर	संपर्क : 9480370961
मैसुर	दि : 5 अक्तूबर	संपर्क : 9019799799
बंगलुरु	दि : 6-8 अक्तूबर	संपर्क : 9590979099

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

18 अगस्त (शुक्र) **से 25 अगस्त** (शुक्र) **पर्युषण पारायण - आप्तवाणी 13 (उ.)** पर **वाचन-सत्संग**
सुबह 9-30 से 12-45 - **सत्संग - सामायिक** एवं शाम 4-30 से 6-45 - **सत्संग,** 8-30 से 9-15 **सामायिक**
26 अगस्त (शनि) सुबह 10 बजे से - **पूज्यश्री के दर्शन** का विशेष कार्यक्रम
19 अक्तूबर (गुरु) रात 8-30 से 10-30 - **दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति**
20 अक्तूबर (शुक्र), सुबह 8-30 से 1, शाम 5 से 6-30 -**नूतन वर्ष के अवसर पर पूजन-दर्शन**

पूणे

8-9 सितम्बर (शुक्र-शनि), शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** तथा **10 सितम्बर** (रवि) शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**
स्थल: गणेश कला क्रिडा मंच, नेहरु स्टेडियम के पास, स्वारगेट, पूणे (महाराष्ट्र). **संपर्क :** 7218473468
11 सितम्बर (सोम), शाम 5-30 से 8-30 -**आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल: स्वयंवर मंगल कार्यालय, 695/3/27, पूणे-सतारा रोड, आदिनाथ सोसायटी के पास, पूणे (महाराष्ट्र).

गांधीनगर

28 अक्तूबर (शनि), शाम 7-30 से 10-30- **सत्संग** तथा **29 अक्तूबर** (रवि) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**
30 अक्तूबर (सोम), शाम 7-30 से 10-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल: च-3 सर्कल के पासवाला मैदान, बस डिपो के पास, सेक्टर -11, गांधीनगर (गुजरात). **संपर्क :** 9427609245

परम पूज्य दादा भगवान का 110वाँ जन्मजयंती महोत्सव - राजकोट शहर में

उद्घाटन समारोह : 1 नवम्बर - शाम 5-30 बजे से...
सत्संग शिविर : 1 से 5 नवम्बर
जन्मजयंती : 3 नवम्बर - सुबह 8 बजे से...
ज्ञानविधि : 5 नवम्बर - शाम 4-30 से 8
स्थल : ग्रीनलेन्ड चौराहे के पास, राजकोट-मोरबी रोड, राजकोट . **संपर्क :** 9426267365

हरिद्वार में केवल 'हिन्दी भाषी महात्माओं' के लिए विशेष शिविर

29 नवम्बर - (शाम 4 बजे) से **3 दिसम्बर** - (दोपहर 1 बजे) तक - **हिन्दी सत्संग शिविर**
स्थल: पतंजलि योगपीठ फेझ-2, दिल्ली-हरिद्वार नेशनल हाइवे, हरिद्वार.
[रूरकी स्टेशन से 16 की.मी और हरिद्वार स्टेशन से 19 की.मी. की दूरी पर स्थित है।]
सूचना : 1) यह शिविर जिन्होंने आत्मज्ञान लिया है ऐसे हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए ही है. माता-पिता के साथ बच्चे भी आ सकतें है. 2) आवास की व्यवस्था सिमित होने के कारण दि. 31 अगस्त 2017 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है. 3) रजिस्ट्रेशन के लिए आपके नजदिकी सत्संग सेन्टर पर संपर्क करें. यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आप अडालज त्रिमंदिर में फोन नं. 9924348880 / 079-39830400 (सुबह 9 से 12 तथा 2 से 6 के दौरान) पर संपर्क करें. **4) शिविर में भाग लेने के लिए शुल्क = रु.1200/- (सिर्फ आवास और भोजन का खर्च).** 5) केन्सलेशन चार्ज 200/- रहेगा.

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557
अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830093230
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

अगस्त 2017
वर्ष - 12 अंक - 10
अखंड क्रमांक - 142

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

जब तक शंका हो तब तक प्रतिक्रमण की आवश्यकता

भगवान की भाषा में उल्टा-सुल्टा नहीं होता। इसलिए कुछ भी झंझट करने की ज़रूरत नहीं है। इसीलिए मैं कहता हूँ न कि 'सिर्फ देखो, हम से किसी को दुःख न हो।' भगवान की भाषा में इतना कहते हैं कि 'सामने वाले को दुःख हो जाए तो आप प्रतिक्रमण करना लेकिन सामने वाले को दुःख नहीं हो तो कोई हरकत नहीं है।' आप शुद्धात्मा ही हो। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा लक्ष (जागृति) में आए, तभी से अनुभव की श्रेणियाँ शुरू हो जाती है। पैर के नीचे कोई जीव कुचल जाए तो 'उसे' शंका होती है, नि:शंकता नहीं रह सकती। अत: तब तक 'चंदूलाल' के पास 'आपको' प्रतिक्रमण करवाना होगा कि 'चंदूलाल, आपने इस जीव को कुचल दिया है, इसलिए प्रतिक्रमण करो।' ऐसे करते-करते सूक्ष्म भाव की अनुभव श्रेणी प्राप्त होगी और 'खुद का स्वरूप अव्याबाध स्वरूप है' ऐसा लगेगा, दिखाई देगा और अनुभव में आएगा। उसके बाद फिर शंका नहीं होगी।

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.